जुलाई 2015

# दादावाणी

कीमत ₹ 10

मैं इस दुनिया के दु:ख लेने के लिए आया हूँ। आपके सुख आपके पास रहने दो।
आपके दु:ख मुझे सौंप दो।

**संपादक : डिम्पल महेता**
वर्ष : १० अंक : ९
अखंड क्रमांक : ११७
**जुलाई २०१५**

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन :** (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Printed at**
**Amba Offset**
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Published at**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Total 32 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**१५ साल**
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
**वार्षिक**
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## मुझ से जो मिले, उसे सुख ही हो...

### संपादकीय

जीवन में तकलीफ किसे नहीं आती? पूर्व कर्मों के फल तो भुगतने ही पड़ते हैं न? इसमें से तो भगवान भी नहीं बच सकते। परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) के जीवन में भी सुख-दुःख के बहुत संयोग आए लेकिन उन सभी संयोगों में वे अपनी निजी समझ से जीवन के निष्कर्ष निकालते रहे। फल भुगतते समय निरीक्षण करने के और संशोधन करने के निजी गुण के परिणाम स्वरूप किसी भी जीव को खुद से दुःख नहीं हो जाए और खुद भी किसी से दुःखी नहीं हो, ऐसी समझ विकसित की और उसके परिणाम स्वरूप मतभेद या कषाय रहित व्यवहार करके, आदर्श जीवन जीया। इसका सबूत इस अंक में उनके जीवन प्रसंगों से देखने को मिलते हैं।

दादाश्री का इतना उच्च आध्यात्मिक डेवेलपमेंट उनके कौन से गुणों के आधार पर था? उनकी अहिंसा, परोपकारी स्वभाव, उदारता, निर्भयता, एडजस्टमेन्ट लेने की क्षमता, फ्लेक्सिबिलिटी, लघुतमता, काउन्टर पुली डालने की कला, व्यापार शुद्धि, परिस्थिति समझकर बरतने की दूरदर्शिता, परहित, अपरिग्रही आचार, *रसीला* व्यवहार, विचारशील, जगत् कल्याण की भावना, शुद्ध प्रेम, अभेद दृष्टि, वीतरागता, कारुण्यता वगैरह विशेष गुणों से युक्त ये असामान्य प्रतिभा उनके जीवन में बचपन से लेकर हर एक प्रसंग में दृष्टिगोचर होती हुई दिखाई देती है।

वे हमेशा कहते थे,'मैं इस दुनिया के दुःख लेने आया हूँ। आपके सुख अपने ही पास रहने दो, आपके दुःख मुझे सौंप दो।' यदि आपको हम पर विश्वास होगा मुझे सौंपने के बाद वे दुःख आपके पास वापस नहीं आएँगें, और यदि आपका विश्वास टूट जाएगा तो आपके पास वापस आएँगे।' आपको कहना है कि 'दादा, मुझे इतने दुःख हैं, वे मैं आपको सौंप देता हूँ। उन्हें मैं ले लूँ तो निबेड़ा आएगा।'

'हम से ये दुःख देखे नहीं जाते, फिर भी इमोशनल नहीं होते। क्योंकि साथ ही साथ उतने ही वीतराग भी हैं, फिर भी सामनेवाले के दुःख हम से सहन नहीं हो पाते। हम अपनी सहनशक्ति जानते हैं। हमें पता है कि हम कितना दुःख सहन कर पाते थे, वैसे ही ये लोग भी किस तरह सहन कर पाते होंगे ऐसा हमारे ध्यान में है। इसलिए सामनेवाले की तकलीफ कैसे दूर हो, ऐसा ही रहा करे, वहीं से कारुण्यता की शुरुआत हुई।'

ऐसे ये अपूर्व अक्रम विज्ञानी पूज्य दादाश्री के जीवन प्रसंग जो उनके श्रीमुख से उद्‌बोधित हुए हैं, उनका संक्षिप्त संकलन यहाँ प्रस्तुत किया है। जिनमें बचपन से ही उनमें रही अद्‌भुत विचक्षणता, दूरदर्शिता, ज्ञानदृष्टि इन प्रसंगों में झलकती है।

अपने निजी अनुभवों से पूर्ण पद प्राप्त करके वे हमें भी यह समझ देते हैं कि पहली सीढ़ी (लेवल एक) व्यवहार जीवन में कैसे लाएँ। यानी किसी को भी दुःख नहीं हो जाए और सभी में शुद्धात्मा देखकर, आदर्श व्यवहार कला का परिचय प्राप्त करके, हमारे आध्यात्मिक जीवन को आदर्श बनाने के लिए यह अंक प्रेरणारूप बन जाएगा यही अभ्यर्थना।

**- जय सच्चिदानंद**

## पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

# मुझ से जो मिले, उसे सुख ही हो...

### मनुष्य जीवन का ध्येय

**प्रश्नकर्ता :** मनुष्य जीवन का ध्येय क्या है?

**दादाश्री :** मानवता के पचास प्रतिशत अंक मिलने चाहिए। जो मानवधर्म है, उसमें पचास प्रतिशत अंक तो आने चाहिए। यह मनुष्य जीवन का ध्येय है। और यदि उच्च ध्येय रखता हो, तो नब्बे प्रतिशत अंक देने चाहिए। मानवता के गुण तो होने चाहिए न? यदि मानवता ही नहीं, तो मनुष्य जीवन का ध्येय ही कहाँ रहा?

यह तो 'लाइफ' (जीवन) सारी 'फ्रेक्चर' (खंडित) हो गई है। किसलिए जी रहे हैं, इसकी भी समझ नहीं है कि मनुष्यसार क्या है?

**प्रश्नकर्ता :** तो मानवधर्म क्या है?

**दादाश्री :** मानवधर्म यानी क्या? उसकी थोड़ी-बहुत बात करते हैं। पूरी बात तो बहुत बड़ी चीज़ है, लेकिन हम थोड़ी बात करते हैं। संक्षिप्त में तो किसी मनुष्य को हमारे निमित्त से दुःख न हो, वह मानवधर्म है।

वास्तव में मानवधर्म किसे कहा जाता है? यदि आप सेठ हैं और नौकर को बहुत धमका रहे हैं, उस समय आपको ऐसा विचार आना चाहिए कि 'अगर मैं नौकर होता तो क्या होता?' इतना विचार आए तो फिर आप उसे मर्यादा में रहकर धमकाएँगे, ज़्यादा नहीं कहेंगे। यदि आप किसी का नुकसान करते हों, तो उस समय आपको यह विचार आए कि 'मैं सामनेवाले का नुकसान करता हूँ, लेकिन कोई मेरा नुकसान करे तो क्या होगा?'

मानवधर्म यानी, हमें जो पसंद है वह लोगों को देना और हमें जो पसंद नहीं हो वह दूसरों को नहीं देना। हमें कोई धौल लगाएँ तो हमें पसंद नहीं है, तो हमें दूसरों को धौल नहीं लगानी चाहिए। हमें कोई गाली दे वह हमें अच्छा नहीं लगता, तो फिर हमें किसी और को गाली नहीं देनी चाहिए। मानवधर्म यानी, हमें जो नहीं रुचता हो वह दूसरों के साथ नहीं करना। हमें जो अच्छा लगे वही दूसरों के साथ करना, उसका नाम मानवधर्म।

'मेरी वजह से किसी को परेशानी न हो', ऐसा रहे तो काम ही बन गया!

अक्लमंद तो किसे कहा जाता है? किसी को भी दुःख नहीं दे और यदि कोई दुःख दे तो उसे जमा कर ले। हमेशा सभी को ओब्लाईज़ (उपकार) करता रहे। सुबह उठने से लेकर ही जिसे ऐसा निरंतर रहे, जिसके लक्ष्य में यही रहे कि किस तरह लोगों के लिए हेल्पफुल (मददागार) बनूँ और वह मानव कहलाता है। फिर आगे जाकर उसे मोक्ष का मार्ग (रास्ता) भी मिल जाता है।

### मानवता की विशेष समझ

**प्रश्नकर्ता :** मानवता के लक्षण ज़रा विस्तार से समझाइए।

**दादाश्री :** मानवता के ग्रेड (कक्षा) भिन्न-

भिन्न होते हैं। प्रत्येक देश की मानवता जो है, उसके डेवेलपमेन्ट के आधार पर सब ग्रेड होते हैं।

खुद को जो अनुकूल आए वैसा ही औरों के प्रति रखना चाहिए कि यदि मुझे दु:ख होता है, तो उसे दु:ख क्यों नहीं होगा? हमारा कोई कुछ चुरा ले तो हमें दु:ख होता है, तो किसी का चुराते समय हमें विचार आना चाहिए कि 'नहीं, किसी को दु:ख हो ऐसा कैसे कर सकते हैं?' यदि कोई हम से झूठ बोलता है तो हमें दु:ख होता है, तो हमें भी किसी के साथ ऐसा करने से पहले सोचना चाहिए।

मानवता अर्थात् 'खुद को जो पसंद है वैसा ही व्यवहार औरों के साथ करना।' यह छोटी व्याख्या अच्छी है लेकिन हर एक देश के लोगों को अलग-अलग तरह का चाहिए।

खुद को जो अनुकूल न आए, ऐसा प्रतिकूल व्यवहार औरों के साथ नहीं करना चाहिए। खुद को अनुकूल है वैसा ही वर्तन औरों के साथ करना चाहिए। यदि मैं आपके घर आऊँ, तब आप 'आइए, बैठिए' कहें तो मुझे अच्छा लगता हो, तो मेरे घर पर जब कोई आए तब मुझे भी उसे 'आइए, बैठिए' ऐसा कहना चाहिए, यह मानवता कहलाती है। फिर हमारे घर पर कोई आए, तब हम ऐसा बोलें नहीं और उनसे ऐसी उम्मीद करें, वह मानवता नहीं कहलाती। हम किसी के घर महेमान बनकर गए हों और वे अच्छा भोजन करवाएँ ऐसी आशा करें, तो हमें भी सोचना चाहिए कि हमारे घर जब कोई मेहमान आए तो उसे अच्छा भोजन करवाएँ, जैसा चाहिए वैसा करना वह मानवता है।

खुद को सामनेवाले की जगह पर रखकर सारा व्यवहार करना, वह मानवता! वैसे खुद को अपमान अच्छा नहीं लगता है और लोगों का 'अपमान' करने में शूरवीर होता है, उसे मानवता कैसे कहें? अत: हर एक बात में विचारपूर्वक व्यवहार करें, वह मानवता कहलाती है।

संक्षेप में, मानवता की हर एक की अपनी-अपनी रीति होती है। वह खुद का जितना 'डेवेलपमेन्ट' हो, उतना ही वह करता रहता है। 'मैं किसी को दु:ख नहीं दूँ', यह मानवता की बाउन्ड्री (सीमा) है और वह बाउन्ड्री हर एक की अलग-अलग होती है। मानवता का कोई एक ही मापदंड नहीं है। 'जिससे मुझे दु:ख होता है, वैसा दु:ख मैं किसी और को नहीं दूँ। कोई मुझे ऐसा दु:ख दे तो क्या होगा? इसलिए वैसा दु:ख मैं किसी को न दूँ।'

## मानवता से भी ऊपर (परे) 'सुपर ह्युमन'

मानवता से भी ऊपर, 'सुपर ह्युमन' (दैवी मानव) किसे कहते हैं? आप दस बार किसी व्यक्ति का नुकसान करें, फिर भी, जब आपको ज़रूरत हो तो उस समय वह व्यक्ति आपकी 'मदद' करे! आप फिर उसका नुकसान करें, तब भी, आपको काम हो तो उस घड़ी वह आपकी 'हेल्प' (मदद) करे। उसका स्वभाव ही हेल्प करने का है। तब हमें समझ जाना चाहिए कि यह इंसान 'सुपर ह्युमन' है। यह दैवी गुण कहलाता है। ऐसे इंसान तो कोई-कोई ही होते हैं। अभी तो ऐसे इंसान मिलते ही नहीं न! क्योंकि लाख मनुष्यों में एकाध ऐसा हो, ऐसा इसका प्रमाण हो गया है।

## संस्कार सिंचन हुआ 'माता' के प्रेम द्वारा

मेरी माताजी संस्कारी भी ऐसी थीं न! माताजी तो मुझे अच्छा सिखलाती थीं। बचपन में मैं एक लड़के को मार-पीट कर घर आया था। उस लड़के को खून निकल आया था। तो माताजी को इसका पता चला, तो मुझ से कहने लगीं कि 'बेटा, यह देख, उसे खून निकला है। ऐसे ही तुझे कोई मारे तो खून निकलने पर मुझे तेरी दवाई लगानी पड़ेगी या नहीं? इस समय उस लड़के की माँ को भी उसकी दवाई लगानी पड़ रही होगी न नहीं? और वह बेचारा कितना रो रहा होगा? उसको कितना दु:ख हो रहा

होगा? कभी किसी को मारकर मत आना, तू मार खाकर आना, मैं तुझे दवाई लगाऊँगी।' बोलिए, अब ऐसी माँ महावीर बनाएगी या नहीं बनाएगी? यानी संस्कार भी माताजी ने उच्च प्रकार के दिए थे।

## मेरी होटल में किसी को दुःख नहीं हो

हमारी माताजी मुझ से उम्र में ३६ साल बड़ी थीं। मैंने मदर (माँ) से पूछा कि 'घर में खटमल हो गए हैं, आपको नहीं काटते क्या?' 'हाँ बेटा, काटते तो हैं, लेकिन वे दूसरों की तरह थोड़े ही साथ में टिफीन लेकर आते हैं' कि 'हमें कुछ दीजिए, माई-बाप?' वे बेचारे कोई बर्तन लेकर तो नहीं आते, जितना खाना हो उतना खाकर चले जाते हैं! मैंने कहा, 'धन्य हैं माताजी आप और इस बेटे को भी धन्य है!'

उसके बाद हम खटमल को जान-बूझकर काटने देते थे। उसे वापस तो नहीं निकाल सकते न बेचारे को! अब इसका फल क्या आएगा? उस खटमल में रहे हुए वीतराग हमारे में रहे हुए वीतराग को फोन करते हैं कि 'ऐसे दाता कहीं नहीं देखे इसलिए इन्हें उच्चतम पद दो।' ये खटमल होते हैं न वे कभी भी भूखे नहीं मरते, रोज़ ही भोजन कर लेते हैं। लोग सोते हैं तब वे भोजन कर ही लेते हैं न? लेकिन हमने क्या किया कि जागते हुए भोजन कर लेने दो। लोग नींद में भोजन करने देते हैं और हम जागते हुए भोजन करने देते हैं और वापस उसे मारने-करने की बात ही नहीं। हाथ में ऐसे तुरंत आ जाता है, लेकिन हम वापस उसे पैर पर रख देते हैं। हालाँकि अब मेरे बिस्तर में खटमल आते ही नहीं, बेचारों का हिसाब पूरा हो गया है। यदि हिसाब अधूरा रखें तो हिसाब कच्चे रह जाएँगे।

कुछ लोग खटमल को मारते नहीं, लेकिन बाहर जाकर डाल आते हैं, लेकिन हाथ में आ जाए तो उसे छोड़ते नहीं। फिर मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या तुझे पक्का विश्वास हो गया है कि एक कम हो गया है अब? ऐसी कौन सी गारन्टी से तू समझ गया कि एक कम हो गया? और ऐसे कम हो जाते, तब तो रोज़ कम ही होते जाते। फिर मैंने कहा कि खटमल को मारने की ज़रूरत नहीं है। उनका सीज़न होता है, उसके बाद अपने आप ही खत्म हो जाते हैं, नहीं तो खत्म करना चाहो फिर भी खत्म नहीं होते। यहाँ आप मार-पीटकर खत्म करो तो पड़ौसी के घर से घुस जाएगा। अब खटमल काटे, तब हमें यह पता चल जाता है कि प्रेम कहाँ है। यदि देह पर अभी तक प्रेम है, तो आत्मा पर कब प्रेम आएगा?

हम तो खटमल को भी खून पीने देते थे कि यहाँ आया है तो अब भोजन करके जा। क्योंकि हमारा यह होटल (शरीर) ऐसा है कि यहाँ किसी को कोई कष्ट नहीं होना चाहिए, यही हमारा व्यवसाय! अब यदि उन्हें भोजन नहीं करवाते तो उसके लिए सरकार हमें थोड़े ही कोई दंड देनेवाली थी? हमें तो आत्मा की प्राप्ति करनी थी! सदैव चौविहार, कंदमूल त्याग, उबला हुआ पानी, यह सब करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी! और तभी तो देखो, यह प्रकट हुआ, पूरा 'अक्रम विज्ञान' प्रकट हुआ! जो सारी दुनिया को स्वच्छ कर दे, ऐसा विज्ञान प्रकट हुआ है!

## जो मुझ से मिले उसे सुख प्राप्त हो

अर्थात् बचपन से मैंने यही सीखा था कि 'भाई, तू मुझे आकर मिला और यदि तुझे कुछ सुख प्राप्त नहीं हुआ तो मेरा तुझ से मिलना बेकार है,' ऐसा मैं कहता था। वह चाहे कितना भी नालायक हो, यह मुझे नहीं देखना है लेकिन यदि मैं तुझे मिला और मेरी ओर से सुगंधि (खुशबु) नहीं आए तो ये कैसे चले? यह धूपबत्ती नालायकों को खुशबू नहीं देती क्या?

**प्रश्नकर्ता :** सभी को देती है।

**दादाश्री :** उसी प्रकार यदि मेरी खुशबू तुझ तक नहीं पहुँचे तो फिर मेरी खुशबू ही नहीं कहलाएगी। अर्थात् कुछ लाभ होना ही चाहिए। ऐसा पहले से ही मेरा नियम रहा है।

## जीवमात्र को भय नहीं हो ऐसी ज्ञान जागृति

किसी भी जीव को दु:ख न हो इस प्रकार से मैं रहता हूँ। हम से किसी जीव को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो इसका उदाहरण देता हूँ। मैं बाइस-पच्चीस साल की उम्र में सिनेमा देखने जाता था और जब लौटता तो रात के बारह-साढ़े बारह बज जाते और हमारे जूतों में लोहे की नाल लगी होने के कारण रात को जूते बहुत आवाज़ करते थे। कुत्ते बेचारे रात में आराम से सोए रहते थे और आवाज़ के कारण कान उठाकर देखते। इसलिए हम समझ जाते थे कि बेचारा हमारी वजह से चौंक गया! हम ऐसे कैसे जन्मे कि मुहल्ले में कुत्ते भी हम से डर जाते हैं? इसलिए पहले से, दूर से ही जूते निकालकर हाथ में पकड़कर आता था। चुपचाप से गली में आ जाता और उसे डरने नहीं देता था। कम उम्र में ही मैंने ऐसा प्रयोग किया था। मेरी वजह से डर था न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, उसकी नींद में भी बाधा आई न!

**दादाश्री :** हाँ, और फिर यदि डर जाए न तो वह स्वभाव नहीं छोड़ेगा। फिर कभी स्वभाव के कारण भौंक भी सकता है, स्वभाव है। इसके बजाय सोने दें तो क्या हर्ज है? मुहल्लेवालों पर नहीं भौंकेगा।

इसलिए अभयदान! अभयदान यानी किसी भी जीवमात्र को त्रास नहीं हो ऐसा बरताव रखना चाहिए। वह है अभयदान। भाव में पहले ऐसे रखने चाहिए कि किसी भी जीव को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो और फिर वे प्रयोग में आएँगे। यदि भाव किए होंगे तो प्रयोग में भी आएँगे' लेकिन अगर भाव ही नहीं किए होंगे तो? भगवान ने इसे बहुत बड़ा दान कहा है। इसके लिए पैसों की कोई जरूरत नहीं पड़ती। सब से बड़ा दान यही है, लेकिन मनुष्यों की इतनी बिसात नहीं है। लक्ष्मीवाले ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए लक्ष्मीवालों को तो लक्ष्मी से ही निपटा देना चाहिए।

## किसी को भी दु:ख नहीं हो ऐसा उच्च व्यवहार

हमारे बड़े भाई यहाँ बड़ौदा में रहते थे। जब मैं बड़ौदा आऊँ तब आसपासवाला कोई कहता, 'हमारे लिए बनियान वगैरह ले आना, हमारे लिए यह ले आना, हमारे लिए दो चड्डियाँ लेते आना।' सभी दोस्त लोग कहते हैं न? और मेरा स्वभाव कैसा? जिस ठेले (दुकान) के सामने खड़ा हुआ और पूछा यानी वहीं से लेना। फिर कम-ज़्यादा हो तो भी निभा लेता था क्योंकि उसे दु:ख नहीं हो इसलिए उसी के यहाँ से ले लेता। यानी मैं अपना स्वभाव समझता था। और जो लोग वस्तु मँगवाते थे, वे लोग ऐसे कि सात जगह पर पूछ-पूछकर, सभी का अपमान कर-करके लाते थे। अत: मैं जानता था कि ये लोग ऐसे हैं कि मुझ से दो आने कम में लाएँ, और मेरे पास मंगवाया तो मेरे दो आने ज़्यादा खर्च होनेवाले हैं। इसलिए मैं दो आने और एक आना अधिक, ऐसा करके तीन आने कम करके उन्हें कीमत बताता था। बारह आने दिए हों तो उनसे ऐसा कहता कि 'मैंने नौ आने दिए हैं।' ताकि वे ऐसा नहीं कहें कि 'मुझ से कमिशन ले गए। मैं तो दस आने का लाता था और आपको मुझे बारह आने देने पड़े। बीच में आपने दो आने ले लिए।' लोग मुझ पर इस तरह 'कमिशन' का आरोप नहीं लगाए इसलिए तीन आने कम लेता था, तीन आने कम कर देता था। हाँ, वर्ना कहते, 'दो आने कमिशन निकाल लिया!' लो! अरे, नहीं निकाला 'कमिशन'। मैं 'कमिशन' निकालना सीखा ही नहीं हूँ।

## परिस्थिति समझकर बरते ऐसी सूक्ष्म समझ

हमारे यहाँ तो काम के लिए मज़दूर थे इसलिए हम ऐसा सब जानते हैं। हमारा नियम ऐसा था कि यदि मज़दूर के पैसों के मामले में कुछ इधर-उधर हो गया हो तो मैं (खजांची की) खबर ले लेता था। बहुत सख्त नियम था। उन (मज़दूरों को) बेचारों को तो वैसे ही बहुत दुःख थे तो हम उन्हें और ज़्यादा मुश्किल में कैसे डाल सकते हैं?

वहाँ पर आपकी *लागणी* (लगाव, प्रेम) कैसी होनी चाहिए? कि यदि आप धर्म समझते हों और यदि आपके पास सौ का नोट हो तो कहीं से भी तुड़वाकर उसे पाँच रुपये दे देने चाहिए। वह बेचारा पाँच रुपये के लिए सारे दिन मेहनत करता है तो उसके आने से पहले आपको वहाँ बैठे रहना चाहिए कि वह कब आए और कब अपनी मज़दूरी लेकर जाए! जैसे ही वह आए ऐसे कहना चाहिए कि ले भाई, तेरे पाँच रुपये! एक मिनट की भी देर नहीं करनी चाहिए। क्योंकि उसे तो मिर्च, इमली और दूसरा क्या-क्या नहीं लेना होता? फिर तेल की शीशी लाया होता है, उसमें थोड़ा सा तेल लेकर, ऐसा सब लेकर घर जाता है, बाद में खाना पकाता है।

## किसी को भी दुःख नहीं हो ऐसी व्यवहार कला

हम तो ऐसा करते थे कि यदि व्यवसाय (धंधे) में तंगी आ जाए तो घर में बताते ही नहीं थे। हीरा बा को बाहरवालों से पता चल जाए कि व्यवसाय में तंगी आई है। वे हम से पूछतीं कि क्या व्यवसाय में घाटा हुआ है? हम कहते कि 'नहीं, नहीं, ये लो रुपये आए हैं तो क्या आपको चाहिए?' तब हीरा बा कहतीं कि 'लोग तो कह रहे हैं कि घाटा हुआ है।' तब मैं कहता कि 'नहीं, नहीं, । हमने तो बल्कि ज़्यादा कमाए हैं लेकिन किसी को बताना मत।'

हमारी कंपनी को घाटा हुआ था इसलिए व्यवसाय थोड़ा मंद पड़ गया था। तब यदि बड़ौदा जाऊँ तो लोग पूछते कि 'क्या बहुत घाटा हुआ है?' तब मैं कहता कि 'आपको कितना लगता है?' तब कहते कि 'लगभग लाख रुपये का घाटा हुआ लग रहा है।' तब मैं कहता कि 'तीन लाख रुपये का घाटा हुआ है।' वैसे तो आधे या पोने लाख का घाटा हुआ होता है लेकिन मैं उसे तीन लाख का कहता क्योंकि वह जानने आया होता था! वह क्या जानने आता यह बात मैं जान जाता कि यदि मैं इसे तीन लाख का कहूँगा तो खुश रहेगा और बेचारे को घर जाकर खाना भी अच्छा लगेगा। इसलिए मैं कहता कि 'तीन लाख का हुआ है,' तब उस दिन वह आराम से भोजन करता। और यदि दूसरा कोई शुभेच्छक आए और पूछे कि 'क्या बहुत घाटा हुआ है?' तब मैं कहता कि 'नहीं, लगभग पचास हजार का घाटा हुआ है।' ताकि उसे भी घर जाकर शांति रहे। शुभेच्छक और अन्य, दोनों प्रकार के लोग आते हैं। दोनों को खुश करके भेजना है। यदि मैं कहूँ कि 'लगभग तीन लाख का घाटा हुआ है।' तो जिसे कुछ जानना है वह तो खुश हो जाता है और वापस उससे कहूँ कि 'चाय पीकर जाओ न?' तब कहेगा कि 'नहीं, मुझे थोड़ा काम है।' क्योंकि उसे मज़ा (आनंद) आ गया न, इसलिए ऐसा सब करता है, उसे खुराक मिल गई, क्योंकि द्वेष है न!

यह स्पर्धा ऐसी चीज़ है कि स्पर्धा के मारे मनुष्य चाहे सो कर लेता है। स्पर्धा हो कि 'मुझ से आगे निकल गया? अब उसे पीछे करना ही चाहिए।' इसलिए पीछे हटाने का प्रयत्न करता ही रहता है। ऐसे व्यक्ति से मैं साफ कह देता कि 'ज़्यादा घाटा हुआ है।' उसे आराम से खाना अच्छा लगा न! तो उसमें हमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन क्या है कि लोगों को जवाब तो देना ही पड़ेगा न! यदि उससे कह दें कि 'नहीं, कोई घाटा नहीं हुआ तो वह

बाहरवालों से और ज़्यादा जानना चाहेगा कि ये तो मना कर रहे हैं। यानी उससे कहना पड़ता है कि तीन गुना घाटा हुआ है। जिसने तुम्हें बताया है उससे पूछ लेना, उसे पता नहीं होगा लेकिन मुझे काफ़ी घाटा हुआ है।' फिर थोड़े दिनों बाद वापस आता है और कहता है कि 'अब व्यवसाय कैसा चल रहा है? बंद करना पड़ेगा?' तब मैं कहता कि 'ऐसा था कि सात लाख की मिलकियत थी, उसमें से तीन लाख कम हो गई।' यानी उसे कुछ अलग तरह का ही बताता था। 'अरे भाई, तुझमें मुझे समझ सकने की सामर्थ्य ही कहाँ है?' मैं ज्ञानीपुरुष हूँ, तुझे दु:ख नहीं दूँगा लेकिन तू इस तरह जानने की कोशिश मत कर। ये तो यों ही पीछे लग जाते! यानी ऐसे सब लोग तो मैने बहुत देखे हैं। जगत् है न, सभी प्रकार के लोग होते हैं!

## एडजस्ट होना वे ही धर्म

इंसान तो किसे कहते हैं? एवरीव्हेर एडजस्टेबल! चोर के साथ भी एडजस्ट हो जाना चाहिए।

एक बार हम नहाने के लिए गए और बाथरूम में मग्गा रखना भूल गए थे। फिर हम ज्ञानी कैसे? एडजस्ट कर लेते हैं। पानी में हाथ डाला तो पानी बहुत गरम था। नल खोला तो टंकी खाली थी। फिर हमने तो धीरे-धीरे हाथ से पानी लगा-लगाकर नहा लिया। सब महात्मा कहने लगे, 'आज दादा को नहाने में बहुत समय लगा।' लेकिन क्या करें? पानी ठंडा हो तब न? हम किसी से भी यह लाओ और वह लाओ नहीं कहते हैं। एडजस्ट हो जाते हैं। एडजस्ट हो जाना ही धर्म है। इस दुनिया में तो प्लस-माइनस का एडजस्टमेन्ट करना है। जहाँ माइनस हो वहाँ प्लस और जहाँ प्लस हो वहाँ माइनस करना है। हमारे सयानेपन को भी यदि कोई पागलपन कहे तो हम कहते हैं, 'हाँ, ठीक है।' यानी तुरंत माइनस कर देते हैं।

## टेढ़े के साथ भी एडजस्ट होते हैं 'ज्ञानी'

'ज्ञानी' तो यदि सामनेवाला टेढ़ा हो तब भी उसके साथ 'एडजस्ट' होते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' को देखकर चलो तो सभी तरह के 'एडजस्टमेन्ट्स' करने आ जाएँगे। उसके पीछे साइन्स क्या कहता है कि वीतराग हो जाओ, राग-द्वेष मत करो। यह तो अंदर कुछ आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ता है। इस व्यवहार में एक पक्षीय, नि:स्पृह हो जाएँ तो टेढ़े कहलाएँगे। जब हमें ज़रूरत हो, तब सामनेवाला टेढ़ा हो फिर भी उसे मना लेना पड़ता है। स्टेशन पर मज़दूर चाहिए तो वह आनाकानी कर रहा हो, तब भी उसे चार आने कम-ज़्यादा करके भी मना लेना पड़ता है, और नहीं मनाओगे तो वह बैग आपके सिर पर ही डालेगा न?

जगत् निकम्मा नहीं है, लेकिन काम लेना आना चाहिए। सभी भगवान हैं और हर एक अलग-अलग काम लेकर बैठे हैं, इसलिए नापसंद जैसा रखना मत।

## काउन्टर पुली डालकर दु:ख देना बंद किया

इन मज़दूरों के प्रति मिनट पचास 'रिवॉल्युशन' (मन की सोचने की गतिशक्ति) होते हैं, जबकि मेरे प्रति मिनट एक लाख रिवॉल्युशन होते हैं। अर्थात् मेरे और मज़दूरों के बीच में अंतर कितना? उनके पचास रिवॉल्युशन होने की वजह से जब आप उनसे कोई बात कहते हो तो उन्हें समझने में बहुत देर होगी। आप व्यवहार की सीधी बात कहो तो वह भी उसकी समझ में नहीं आती। फिर जब आप उसे अलग तरीके से समझाओ, तब उसके पल्ले पड़ती है। अब मेरे रिवॉल्युशन अधिक होने की वजह से इन ऊँची कौमवालों को मेरी बात समझने में देर लगती थी। हमारे समझाने पर भी वे नहीं समझते थे। इसलिए मैं क्या कहता था कि 'यह कम अक़्ल है।' इसकी वजह से भीतर में पावर अधिक बढ़ जाता था।

'इतना समझाने पर भी नहीं समझता? कैसा मूर्ख इंसान है?' ऐसा कहकर उस पर गुस्सा करता रहता था। फिर मेरी समझ में आया कि इन रिवॉल्युशन की वजह से ऐसा होता है, जिसके कारण उसके दिमाग़ में उतरता नहीं है। अब अगर हम सामनेवाले का कसूर बताएँ तो वह हमारा कसूर है। इसलिए फिर मैंने काउन्टर पुली लगाना शुरू कर दिया।

क्योंकि यदि पंप पंद्रह सौ रिवॉल्युशनवाला हो और तीन हज़ारवाले इंजन पर चलाएँ तो पंप टूट जाएगा। इसलिए फिर काउन्टर पुली लगानी पड़ती है। इंजन चाहे तीन हज़ारवाला हो और पंप भले ही पंद्रह सौ वाला हो लेकिन बीच में पुली लगानी चाहिए ताकि पंप तक पंद्रह सौ ही पहुँचे। काउन्टर पुली आपके समझ में आता है? उसी प्रकार मैंने भी फिर लोगों से बात करते समय काउन्टर पुली लगाना शुरू कर दिया। फिर मेरा गुस्सा होना बंद हो गया। बात सामनेवाले की समझ में आए, उस प्रकार काउन्टर पुली देनी चाहिए!

## ज्ञानी की फ्लेक्सिबिलिटी

**प्रश्नकर्ता :** खिलौनों जैसे छोटे बच्चों के साथ आपको किस तरह रास आता है?

**दादाश्री :** हम 'काउन्टर पुलियों' का सेट रखते हैं। इतने सारे सेट रखते हैं कि कोई व्यक्ति यहाँ पर आए कि उसी तरह से हमारी 'काउन्टर पुली' सेट कर देते हैं। इसलिए इतना सा बच्चा आए और मुझे 'जय-जय' (नमस्कार) करे, तो मुझे उसके साथ बातचीत करनी पड़ती है। हम से बालक कभी भी भयभीत नहीं होता।

हमें ट्रेन में कोई मिले और हम 'ज्ञानी' हैं ऐसा वह नहीं जानता हो, फिर भी हम पुली लगा देते हैं, 'हम पेसेन्जर हैं', ऐसी।

**प्रश्नकर्ता :** आपकी समकक्षावाला कोई आए, तब क्या करते हैं?

**दादाश्री :** हमारी समकक्षा है ही नहीं। यह बेजोड़ पद माना जाता है। शास्त्रकारों ने ही इसे 'बेजोड़' कहा है।

मेरी समकक्षा का आए तब तो मैं उसका शिष्य बन जाऊँ। हमने तो पहले से ही तय किया है कि हर एक का शिष्य बन जाना है, ताकि उसे अड़चन नहीं पड़े। जो शिष्य बनता है, वही कालक्रम से अपना गुरु बनेगा, इसलिए सावधानी से चलना। इसलिए गुरुपना मत कर बैठना। और उस व्यक्ति के शिष्य बन जाएँ तो हमें क्या फायदा होता है? हम उसके ही गुरु बन चुके होते हैं! उसे अड़चन आए तब उसे पूछने आना पड़ता है!

**प्रश्नकर्ता :** वह समझ में नहीं आया, दादा।

**दादाश्री :** हम शिष्य बनें इसलिए संबंध स्थापित हो गया। इसलिए फिर से वह हमारे पास शिष्य बनकर आएगा। हम उसके शिष्य नहीं बने होते तो वह हमारे पास आता नहीं और लाभ उठाता नहीं।

## मतभेद को हटाकर, टालो दुःख

मैं आप सभी को जो यह कह रहा हूँ न, वह खुद अपने आप पर ट्रायल किए बिना नहीं बताता। ट्रायल के बाद ही कह रहा हूँ। क्योंकि ज्ञान नहीं था तब भी वाइफ के साथ मुझे मतभेद नहीं था। मतभेद यानी दीवार से सिर टकराना। लोगों को भले ही इसकी समझ नहीं है, लेकिन मेरी समझ में आ गया था कि मतभेद पड़ा यानी यह खुली आँखों से दीवार से टकरा गया!

हमें हीरा बा के साथ कभी भी वाणी से 'मेरा-तेरा' नहीं हुआ। लेकिन एक बार हमारे बीच मतभेद पड़ गया था (होते-होते रह गया)। उनके भाई के वहाँ पहली बेटी की शादी थी। उन्होंने मुझ से पूछा कि 'उन्हें क्या देना है?' तब मैंने उन्हें कहा कि 'जो आपको ठीक लगे, लेकिन घर में ये चाँदी

के बरतन पड़े हुए हैं, वे दे दीजिए! नया मत बनवाना।' तब उन्होंने कहा कि 'आपके ननिहाल में तो मामा की बेटी की शादी हो तो बड़े-बड़े थाल बनवाकर देते हैं!' वे 'मेरे' और 'आपके' शब्द बोलें तब से ही मैं समझ गया कि आज आबरू गई अपनी। हम एक ही हैं, वहाँ मेरा-तेरा होता होगा? मैं तुरंत ही समझ गया और तुरंत ही पलट गया, मुझे जो कहना था उस पर से पूरा ही मैं पलट गया। मैंने उनसे कहा, 'मैं ऐसा नहीं कहना चाहता हूँ। आप चाँदी के बरतन देना और ऊपर से पाँच सौ एक रुपये देना, उन्हें काम आएँगे।' तभी वे कहने लगे, 'हं... इतने सारे रुपये तो कभी दिए जाते होंगे? आप तो जब देखो तब भोले के भोले ही रहते हो, जिस किसी को देते ही रहते हो।' मैंने कहा, 'वास्तव में मुझे तो कुछ आता ही नहीं।'

देखो, यह मेरा मतभेद पड़ रहा था लेकिन किस तरह से संभाल लिया पलटकर! अंत में मतभेद नहीं पड़ने दिया। पिछले तीस-पैंतीस वर्षों से हमारे बीच नाम मात्र का भी मतभेद नहीं हुआ है। बा भी देवी जैसे हैं। हमने किसी जगह पर मतभेद पड़ने ही नहीं दिए। मतभेद पड़ने से पहले ही हम समझ जाते हैं कि यहाँ से पलट डालो, और आप तो सिर्फ दाएँ और बाएँ, दो तरफ से ही बदलना जानते हो कि ऐसे पेच चढ़ेंगे या ऐसे पेच चढ़ेंगे। हमें तो सत्रह लाख तरह के पेच घुमाने आएँ लेकिन गाड़ी रास्ते पर ला देते हैं, मतभेद नहीं होने देते। अपने सत्संग में लगभग बीस हज़ार लोग और लगभग चार हज़ार (नियमित) महात्मा हैं, लेकिन हमारा किसी के साथ एक भी मतभेद नहीं है। जुदाई मानी ही नहीं मैंने किसी के साथ!

## जहाँ मतभेद नहीं वहाँ विज्ञान

हमारे और हीरा बा के बीच कोई मतभेद ही नहीं पड़ता था। हमने उनके काम में हाथ ही नहीं डाला कभी भी। उनके हाथ से पैसे गिर गए हों, हमने देखे हों, फिर भी हम ऐसा नहीं कहते कि 'आपके पैसे गिर गए।' उन्होंने देखा या नहीं देखा? घर की किसी बात में हम हस्तक्षेप नहीं करते थे। वे भी हमारी किसी बात में दख़ल नहीं करती थीं। हम कितने बजे उठते हैं, कितने बजे नहाते हैं, कब आते हैं, कब जाते हैं, ऐसी हमारी किसी बात में कभी भी वे हमें नहीं पूछती थी। और किसी दिन हमें कहें कि 'आज जल्दी नहा लेना।' तो हम तुरंत धोती मंगवाकर नहा लेते थे। अरे, अपने आप ही तौलिया लेकर नहा लेते थे। क्योंकि हम समझते थे कि ये 'लाल झंडी' दिखा रही हैं, इसलिए कोई डर होगा। पानी नहीं आनेवाला हो या ऐसा कुछ हो तभी वे हमें जल्दी नहा लेने को कहेंगी, यानी हम समझ जाते। इसलिए थोड़ा-थोड़ा व्यवहार में आप भी समझ लो न, कि किसी के काम में हाथ डालने जैसा नहीं है।

जहाँ मतभेद है, वहाँ अंश ज्ञान है और जहाँ मतभेद ही नहीं, वहाँ विज्ञान है। जहाँ विज्ञान है, वहाँ सर्वांश ज्ञान है। 'सेन्टर' में बैठें, तभी मतभेद नहीं रहते, तभी मोक्ष होता है। लेकिन डिग्री पर बैठो और 'हमारा-तुम्हारा' रहे तो उसका मोक्ष नहीं होता। निष्पक्षपाती का मोक्ष होता है।

## हमें मतभेद से पहले ही 'ज्ञान' हाज़िर रहता है

अपने में कलुषित भाव रहा ही न हो तो, उसके कारण सामनेवाले को भी कलुषित भाव नहीं होगा। यदि आप नहीं चिढ़ोगे, तब वे भी शांत हो जाएँगे। दीवार जैसे हो जाए, तब फिर सुनाई नहीं देगा। हमें पचास साल हो गए लेकिन कभी भी मतभेद ही नहीं हुआ। हीरा बा के हाथ से घी गिर रहा हो, तब भी मैं देखता ही रहता हूँ। हमें तो उस समय ज्ञान हाज़िर रहता है कि वे घी गिरा ही नहीं सकतीं। मैं कहूँ कि गिराओ तब भी नहीं गिराएँगी। जान-बूझकर कोई घी गिराता होगा? नहीं। फिर भी

घी गिर जाता है, वह देखने जैसा है, इसलिए देखो! हमें मतभेद होने से पहले ज्ञान ऑन द मोमेन्ट (तत्क्षण) हाज़िर रहता है।

### हम घर में गेस्ट की तरह रहते हैं

घर में अपना *चलण* (वर्चस्व, सत्ता) नहीं रखना चाहिए। जो मनुष्य *चलण* रखता है, उसे भटकना पड़ता है। हमने भी हीरा बा से कह दिया था कि हम खोटे सिक्के हैं। हमें भटकना पुसाता नहीं न! खोटा सिक्का किस काम का? वह भगवान के पास पड़ा रहेगा। घर में अपना *(चलण)* वर्चस्व जमाने जाओगे तो टकराव होगा न? हमें अब 'समभाव से *निकाल* (निपटारा)' करना है। घर में 'वाइफ' के साथ 'फ्रेन्ड' (मित्र) की तरह रहना है। वह आपकी 'फ्रेन्ड' और आप उसके 'फ्रेन्ड'! और यहाँ कोई *नोंध* (नोट) नहीं करता कि *चलण* तुम्हारा था या उनका था! म्युनिसिपालिटी में भी नोट नहीं होता और भगवान के यहाँ भी नोट नहीं किया जाता। हमें नाश्ते से लेना-देना है या *चलण* से? इसलिए यह पता करो कि किस तरह से अच्छा नाश्ता मिल सकता है। अगर म्युनिसिपालिटीवाले नोट रखते कि घर में किसका *चलण* है, तब तो मैं भी एडजस्ट नहीं होता। कोई भी नोट नहीं करता है।

जब हम बड़ौदा जाते हैं तब घर में हीरा बा के गेस्ट की तरह रहते हैं। यदि घर में कुत्ता घुस आए तब हीरा बा को तकलीफ होगी, 'गेस्ट' को क्या तकलीफ? कुत्ता घुस जाऐ और घी में मुँह डाल दे तो जो मालिक होगा उसें चिंता होगी, गेस्ट को क्या? गेस्ट तो यों ही देखते रहेंगे। पूछेंगे कि 'क्या हो गया?' तब कहेंगे कि 'घी झूठा (खराब) कर गया।' इस पर गेस्ट कहेंगे 'अरे, बहुत बुरा हुआ,' ऐसा नाटकीय रूप से कहेंगे। बोलना तो पड़ेगा कि 'बहुत बुरा हुआ'। यदि हम कहें कि 'अच्छा हुआ' तो घर से बाहर निकाल देंगे। हमें गेस्ट की तरह नहीं रहने देंगे।

### 'दु:ख' न देने के लिए एडजस्टमेन्ट लेते थे

यदि कढ़ी नमकीन आए तो हम कम खाते हैं या फिर कढ़ी खाए बिना नहीं चले तो धीरे से उसमें थोड़ा सा पानी मिला देते हैं। खारी हो गई हो तो थोड़ा पानी मिलाने पर तुरंत खारापन कम हो जाएगा। एक दिन हीरा बा ने देख लिया, तो वे कहने लगीं, 'यह क्या किया? यह क्या किया? आपने उसमें पानी डाला?' तब मैंने कहा कि 'चूल्हे पर रखकर पानी डालकर पकाते हैं और थोड़ी देर के बाद दो उफान आते हैं तब आप समझती हैं कि पक गई और यहाँ पर मैंने पानी डाला है, इसलिए आप समझती हैं कि कच्ची है? मगर ऐसा कुछ भी नहीं है।' लेकिन ऐसा नहीं खाने देतीं। चूल्हे पर भी तो पानी ही डालना है न?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, आपने जो किया वह कितनी जागृति कि पानी डाल दिया। आपको उन्हें नहीं कहना है कि इसमें नमक ज़्यादा हो गया है इससे उन्हें दु:ख होता इसलिए पानी डाल दिया।

**दादाश्री :** हाँ, अरे कई बार तो चाय में शक्कर नहीं होती थी, तब भी हमने कहा नहीं है। इस पर लोग कहते हैं कि 'ऐसा चला लोगे तो घर में सब बिगड़ जाऐगा।!' मैं कहता, 'कल देख लेना आप।' फिर दूसरे दिन वे कहतीं कि 'कल चाय में शक्कर नहीं थी फिर भी आप कुछ बोले नहीं हम से?' मैंने कहा, 'मुझे आपसे कहने की क्या ज़रूरत है? आपको पता चल ही जाएगा! अगर आप चाय नहीं पी रही होतीं तब मुझे कहने की ज़रूरत पड़ती। जब आप भी चाय पीती हैं, तो फिर मुझे कहने की ज़रूरत क्या है?'

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कितनी जागृति रखनी पड़ती है, हर क्षण!

**दादाश्री :** प्रत्येक क्षण, चौबीस घंटे जागृति, उसके बाद यह ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह ज्ञान यों ही नहीं हुआ है।

## प्रोमिस मतलब प्रोमिस

पैंतालीस साल हो गए, हमें घर में वाइफ के साथ मतभेद नहीं हुआ है। वह भी मर्यादा में रहकर बात करती हैं और मैं भी मर्यादा में रहकर बात करता हूँ। अगर कभी वे अमर्यादित हो जाएँ तो मैं समझ जाता हूँ कि वे अमर्याद हो गई हैं। इसलिए मैं कह देता हूँ कि 'आपकी बात ठीक है,' लेकिन मतभेद होने नहीं देता। एक मिनट के लिए भी उन्हें ऐसा महसूस नहीं होने देता कि मुझे दु:खी कर रहे हैं। हमें भी ऐसा नहीं लगता कि वे हमें दु:खी कर रही हैं।

हीरा बा की एक आँख १९४३ के साल में चली गई। उनको ग्लुकोमा की (आँख की) बीमारी थी। डॉक्टर उनका इलाज कर रहे थे और ग्लुकोमा का ऑपरेशन करने गएँ और आँख पर असर हो गया, इसलिए नुकसान हुआ।

तब लोगों के मन में हुआ कि यह एक 'नया' दूल्हा मिल गया, फिर से ब्याह रचाएँ। तभी कन्याओं की भरमार थी न! और कन्याओं के माता-पिता की इच्छा ऐसी रहती थी कि कैसे भी करके आखिर कुएँ में धकेलकर भी निपटारा करना है। इसलिए भादरण के एक पटेल आएँ, उनके साले की बेटी होगी, इसलिए आए थे। मैंने पूछा, 'क्या काम है आपको?' तब उन्होंने कहा, 'आपके साथ ऐसा हो गया?' अब उन दिनों, १९४४ में मेरी उम्र छत्तीस साल की थी। तो मैंने उनसे कहा, 'क्यों आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?' तब वे कहने लगे, 'एक तो हीरा बा की आँख चली गई, दूसरा संतान भी नहीं है।' मैंने कहा, 'संतान नहीं है, लेकिन मेरे पास कोई स्टेट भी नहीं है। बड़ौदा जैसी रियासत नहीं है कि मुझे उसका उत्तराधिकारी चाहिए। यदि स्टेट हो तो संतान को दिया काम का कहलाएगा। यह एकाध घर है, थोड़ी-बहुत ज़मीन है तो वह भी हमें फिर किसान ही बनाएगी न! अगर स्टेट होती तो ठीक था!' और फिर मैंने उनसे पूछा कि 'अब आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? जब शादी हुई तब हमने हीरा बा से प्रोमिस किया था। एक आँख चली गई तो क्या हुआ! उनकी दोनों आँखें चली जाएँगी तब भी मैं हाथ पकड़कर चलाऊँगा।' उन्होंने कहा, 'आपको दहेज देंगे तो ठीक है?' मैंने कहा, 'आप अपनी बेटी को कुएँ में धकेलना चाहते हैं? इससे तो हीरा बा दु:ख हो जाएँगी। हीरा बा दु:खी होंगी या नहीं कि 'मेरी आँख चली गई इसलिए यह नौबत आई न?' हमने तो प्रोमिस टू पे किया है (वचन दिया है)। मैंने उन्हें कहा, 'मैं किसी भी हालत में मुकरनेवाला नहीं, चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए तब भी प्रोमिस यानी प्रोमिस!' क्योंकि मैंने प्रोमिस किया है, प्रोमिस करने के बाद मुकरते नहीं हैं। हमारा एक जनम उनके लिए, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है। और बहुत जनम मिलेंगे शादी के मंडप में हाथ थामा था, हाथ थामा यानी प्रोमिस किया हमने। और सभी की हाज़िरी में प्रोमिस किया था। क्षत्रिय के तौर पर हमने जो प्रोमिस किया है, उसके लिए एक जन्म न्योछावर कर देना चाहिए!

## ऐसे अंदरवाले भगवान खुश होते हैं

घर में बैठना पसंद नहीं हो, फिर भी कहना कि तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। तब वह भी कहेगी कि तुम्हारे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। तब मोक्ष में जाया जा सकेगा। दादा मिले हैं न, इसलिए मोक्ष में जाया जा सकेगा।

**प्रश्नकर्ता :** आप हीराबा से कहते हैं?

**दादाश्री :** हाँ, हीराबा से मैं अभी भी कहता हूँ न!

मैं भी, इस उम्र में भी हीराबा से कहता हूँ, कि 'आपके बगैर मैं बाहर जाता हूँ, पर मुझे अच्छा नहीं लगता।' अब वे मन में क्या समझती हैं, 'मुझे अच्छा लगता है और उन्हें क्यों अच्छा नहीं लगता होगा?' ऐसा कहें तो संसार बिगड़ नहीं जाएगा। अब

तू घी डाल न यहाँ से, नहीं डालेगा तो रूखापन आ जाएगा! डालो सुंदर भाव! हीराबा मुझे कहती हैं, 'मैं भी आपको याद आती हूँ?' मैंने कहा, 'अच्छी तरह, लोग याद आते हैं तब क्या आप नहीं याद आओगी?!' और वास्तव में याद आती भी हैं, याद नहीं आतीं ऐसा नहीं!

आदर्श है हमारी लाइफ (जीवन)! हीराबा भी कहती हैं, 'आप जल्दी आना।'

**प्रश्नकर्ता :** क्या आपने कभी हीरा बा से अनुमति माँगी है? अब हम जाएँ?

**दादाश्री :** हाँ, वे देती थीं, 'जल्दी आना' ऐसा भी कहती थीं और 'सभी का भला हो ऐसा करना,' ऐसा भी कहती थीं।

मुझे सतहत्तर साल होने आए और हीरा बा को पचहत्तर होने को आए, लेकिन हमारे बीच कभी भी मतभेद नहीं हुआ। अभी भी वे हमें याद करती होंगी। पूरे दिन आनंद में रहती हैं। पूरे दिन मस्ती में, क्योंकि अन्य किसी भी प्रकार का विचार ही नहीं आता न।

ऐसे प्रेम से, फिर उनके अंदरवाले भगवान हम पर इतने खुश हो जाते हैं कि कहते हैं 'आप जो माँगोगे वह फल आपको देंगे,' और भगवान तो आपके पास ही हैं, दूर नहीं गए। उनके अंदर भगवान हैं। आपके भगवान आपको फल नहीं देंगे लेकिन उनके भगवान आपको देंगे। और आपके भगवान उन्हें देंगे। जैसा आपका डीलिंग हो (व्यवहार) उस पर आधार है। और भगवान कुछ देते-लेते नहीं हैं। लेकिन आप यदि उन्हें दु:ख नहीं दोगे तो उसका फल ऐसा ही आएगा। यह तो एक्ज़ेक्टली साइन्टिफिक पद्धति की बात कर रहा हूँ। यह बात सिर्फ यहाँ पर समझाने के लिए नहीं है। यह बाह्य विज्ञान विनाशी है और अपना जो अंतर विज्ञान है, वह अविनाशी है। यह बाह्य विज्ञान तो कुछ हद तक अच्छा है लेकिन यदि हद से बाहर जाए तो सामनेवाला सभी को मारकर खत्म कर देगा। जिस ज्ञान से सुखी हुए वही ज्ञान यदि एबव नॉर्मल हो जाए तो मार डालता है। उसे बाह्य विज्ञान कहते हैं।

## परिणाम स्वरूप, हिस्सेदार ने देखे भगवान

हिस्सेदार के साथ हमने पिस्तालीस साल तक हिस्सेदारी की लेकिन एक भी मतभेद नहीं हुआ। तब भीतर से कितनी परेशानी सहन करते होंगे? भीतर की परेशानी तो होंगी न? क्योंकि इस दुनिया में मतभेद यानी क्या कि परेशानियों का सामना करना।

इसलिए ज्ञान होने से पहले भी हमने मतभेद नहीं होने दिया था।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन आप जो एडजस्टमेन्ट लेते थे, वह पूर्व का सेटलमेन्ट (हिसाब चुकता) होता होगा या नहीं, इसका क्या प्रमाण (भरोसा)?

**दादाश्री :** सेटलमेन्ट ही। यह कोई नई बात नहीं है। सवाल सेटलमेन्ट का नहीं है, अब नये सिरे से भाव नहीं बिगाड़ना चाहिए। वह तो सेटलमेन्ट है, इफेक्ट (परिणाम) है लेकिन इस समय नया भाव नहीं बिगड़ता है। हमारा नया भाव मज़बूत हो जाता है कि यही करेक्ट (सही) है। आपको कुछ अच्छा लगा या उकता गए?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन क्लेश से मुक्ति रहती है।

**दादाश्री :** हाँ, सहन करने पर क्लेश से मुक्ति रहती है और सिर्फ क्लेश से मुक्ति ही नहीं, बल्कि सामनेवाला इंसान, भागीदार और उसके सारे परिवार की उर्ध्वगति होती है। हमारा ऐसा देखकर उनका भी मन विशाल हो जाएगा। संकीर्ण मन विशाल हो जाएँगे। रात-दिन साथ में रहने के बावजूद भागीदार भी ऐसा ही कहते थे कि 'दादा भगवान आइए, आप तो भगवान ही हैं।' देखिये, भागीदार को मुझ पर प्रेम उत्पन्न हुआ न! साथ रहे, मतभेद नहीं हुआ और प्रेम उत्पन्न हुआ! तो कितना काम निकाल लेते हैं!

## दादा का आदर्श व्यवहार

हमारा आदर्श व्यवहार होता है। हम से किसी को अड़चन हो, ऐसा नहीं होता। किसी के खाते में हमारी अड़चन जमा नहीं होती। हमें कोई अड़चन दे और हम भी अड़चन दें तो हम में और आपमें फर्क क्या? हम सरल हैं, सामनेवाले को अंटी में रखकर सरल रहते हैं! इसलिए सामनेवाला समझता है कि 'दादा अभी कच्चे हैं।' हाँ, कच्चे होकर छूट जाना बेहतर, लेकिन पक्के होकर उसकी जेल में जाना गलत है। ऐसा तो कहीं किया जाता होगा? हमें हमारे भागीदार ने कहा कि 'आप बहुत भोले हैं।' तब मैंने कहा कि 'मुझे भोला कहनेवाला ही भोला है।' तब उन्होंने कहा कि 'आपको बहुत लोग छल जाते हैं।' तब मैंने कहा कि 'हम जान-बूझकर छले जाते हैं।'

हमारा संपूर्ण आदर्श व्यवहार होता है। जिनके व्यवहार में कोई भी कमी होगी, वह मोक्ष के लिए पूरा लायक हुआ नहीं कहा जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञानी के व्यवहार में दो लोगों के बीच भेद होता है?

**दादाश्री :** उनकी दृष्टि में भेद ही नहीं होता, वीतरागता होती है। उनके व्यवहार में भेद होता है। एक मिल मालिक और उसका ड्राइवर यहाँ आएँ, तो सेठ को सामने बिठाऊँगा और ड्राइवर को मेरे पास बिठाऊँगा, इससे सेठ का पारा उतर जाएगा! और प्रधानमंत्री आएँ तो मैं खड़ा होकर उनका स्वागत करूँगा और उन्हें बिठाऊँगा, उनका व्यवहार नहीं चूकूँगा। उन्हें तो विनयपूर्वक ऊपर बिठाऊँगा, और उन्हें यदि मेरे पास से ज्ञान ग्रहण करना हो, तो मेरे सामने नीचे बिठाऊँगा, लोक मान्य को व्यवहार कहा है और मोक्ष मान्य को निश्चय कहा है। इसलिए लोक मान्य व्यवहार को उसी रूप में एक्सेप्ट (स्वीकार) करना पड़ता है। हम उठकर उन्हें नहीं बुलाएँ तो उन्हें दुःख होगा, उसकी जोखिमदारी हमारी कहलाएगी।

## ज्ञानी का शुद्ध व्यवहार

हमारा व्यवहार सुंदर होता है। मैं पूरे दिन आदर्श व्यवहार में ही रहता हूँ। आसपास पूछने जाएँगे न तो भी सभी कहेंगे, 'वे कभी भी झगड़े ही नहीं हैं। कभी चिल्लाए ही नहीं हैं। कभी किसी के साथ गुस्सा नहीं किया है।' सभी ऐसा कहें तो वह आदर्श कहलाएगा या नहीं कहलाएगा? मेरे घर पर वाइफ से पूछने जाएँ तो कहेंगी कि 'वे तो भगवान ही हैं।' अरे, वे हमारे दर्शन भी करती हैं। यहाँ पैर से माथा टेक कर दर्शन करती हैं। व्यवहार आदर्श-शुद्ध लगे, फिर क्या झंझट है?

तो भी एक बार किसी को व्यवहार में मेरी कोई भूल दिखाई दी। तो मुझ से कहने लगे कि 'आपको ऐसा करना चाहिए न? यह आपकी भूल है।' मैंने कहा कि 'भाई, आपने तो आज जाना, लेकिन मैं तो बचपन से जानता हूँ कि यह भूलवाला है।' तब कहने लगे कि 'नहीं, बचपन में ऐसे नहीं थे, अभी हुए हैं।' मतलब यह सब अपनी-अपनी समझदारी से है। मतलब हम अपना पहले ही दिखा देते हैं कि हम कच्चे ही हैं पहले से। तो फिर टकराव होगा ही नहीं न! उनका टाइम भी नहीं बिगाड़ेगा और उन्हें दुःख भी नहीं होगा।

हमारा व्यवहार शुद्ध के बिल्कुल नज़दीक का होता है। उसे शुद्ध कहें तो चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** पहले यह बताइए कि परफेक्ट (संपूर्ण) शुद्ध कैसा होता है?

**दादाश्री :** किंचित्मात्र, शब्द से भी किसी को नुकसान नहीं हो, मन से नुकसान नहीं, मन से नुकसान तो आप भी नहीं करते लेकिन शब्द से और देह से नुकसान नहीं करे, वह बिल्कुल शुद्ध व्यवहार।

**प्रश्नकर्ता :** तब आप जो कहते हैं, आपका

लगभग शुद्ध, तो वह और संपूर्ण शुद्ध, तो दोनों में अंतर क्या है?

**दादाश्री :** कभी-कभी हम कहते हैं न कि चार डिग्री कम, तो उससे फर्क पड़ता है।

## दादा की व्यवहार शुद्धि

यहाँ कोई आया हो और आचरण ज़रा उल्टा हो, तो वह दूसरों को हटाकर विधि कर लेता है। लेकिन उसमें भी कषाय नहीं है। मतलब आचरण उल्टा-सुल्टा होता है। यहाँ से हटा देना वह गलत नहीं कहलाएगा? हम सब समझते हैं, यहाँ बैठे-बैठे सबकुछ जानते हैं कि कौन क्या कर रहा है? भले ही तेरा आचरण टेढ़ा है लेकिन अंदर कषाय नहीं हैं न? उल्टा आचरण वह प्रकृति है, प्रकृति गुण है। उनका नाम नहीं लिया हो तो भी उछले बिना नहीं रहते। यानी यहाँ से दो लोगों को हटाकर विधि करने बैठ जाते हैं।

हमारे साथ तो ऐसी कितनी ही घटनाएँ होती हैं। अरे, मैं दाढ़ी कर रहा होऊँ और पैर नीचे रखा हो न, तो भी लोग विधि करने बैठ जाते हैं। ऐसा नहीं सोचते कि ये हिलेंगे तो क्या होगा? अरे, खाते समय विधि नहीं छोड़ते न? फिर भी शुद्ध व्यवहार है। हम जानते हैं न कि यह कषाय रहित परिणाम है। यदि मन बिगाड़े बगैर उनसे कहा हो, कि अभी विधि नहीं करनी है चले जाओ, तो भी उन्हें कुछ नहीं लगता।

हमारा व्यवहार आदर्श ही होता है। जगत् ने देखा नहीं हो ऐसा हमारा व्यवहार होता है। हमारा व्यवहार मनोहर होता है, वर्तन भी मनोहर होता है, विनय भी मनोहर होता है। व्यवहार को दूतकार कर किसी ने आत्मा प्राप्त नहीं किया है और इस तरह से जो आत्मा प्राप्त करने की बात कर रहा है वह शुष्कज्ञान है। दूतकारा तो फिर रहा ही क्या? निश्चय कहाँ रहा?

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार को दूतकारे तो ओटोमेटिक निश्चय को दूतकारा ही जाता है।

**दादाश्री :** निश्चय उत्पन्न ही नहीं होता न, व्यवहार को दूतकारा हो तो। निश्चय नहीं है ऐसा माना जाता है, समभाव से *निकाल* करना नहीं होता और फिर कहेंगे, 'हमें निश्चय से आत्मा प्राप्त हो चूका है।' ऐसा चलता नहीं, बेज़मेन्ट चाहिए। आसपासवाले चिल्लाएँ और यह कहेगा, 'मैं आत्मा हूँ,' किस तरह चले? मेरे साथ रहनेवाले सभी को पूछो, 'दादाजी, आपको परेशान कर देते होंगे?' तब कहेंगे 'नहीं।'

## शुद्ध व्यवहार-शुद्ध निश्चय समझाते हैं दादा

निश्चय शुद्ध है, व्यवहार शुद्धि किसे कहना चाहिए? कषाय रहित व्यवहार वह व्यवहार शुद्धि है। फिर चाहे मोटा हो या पतला हो, छोटा हो, काला हो या गोरा हो वह उन्हें देखने की ज़रूरत नहीं है लेकिन कषाय रहित है या नहीं ? अगर हाँ, तब वह शुद्ध व्यवहार है।

अब कषाय कहाँ खड़े होते हैं? जहाँ नियम होते हैं, वहाँ कषाय होते हैं। अरे, खाते समय मत जाना, वहाँ गड़बड़ मत करना। मन अंदर उल्टा चलता है, फिर कषाय बचाव खोजते हैं। यानी यहाँ तो कषाय ही नहीं है न! जब आना चाहें तब वापस आए।

कोई माला चढ़ाने आए, पैर छूए वह भी हमारा हिसाब है। और फिर कोई मारता हो, वह भी हमारा हिसाब है। आपको कोई गाली दे, तब आपको उसमें शुद्धात्मा ही दिखना चाहिए। वह व्यवहार नहीं दिखना चाहिए। व्यवहार आपका हिसाब है। आपका जो भुगतने का हिसाब था, वह पूरा हो रहा है। इसलिए वह अपना व्यवहार कर रहा है, लेकिन वह खुद तो शुद्ध ही है। मतलब उसके प्रति शुद्धता की दृष्टि रहे तो वह शुद्ध निश्चय कहलाता है। हम शुद्ध और जगत् भी शुद्ध। जितना शुद्ध उपयोग, उसे शुद्ध निश्चय कहते हैं, वही शुद्ध आत्म रमणता और तभी

शुद्ध व्यवहार रहेगा। जितना शुद्ध निश्चय होगा, उतनी व्यवहार शुद्धता रहती है। निश्चय एक ओर कच्चा, अशुद्ध हो उतनी व्यवहार अशुद्धता।

## ज्ञानी नहीं दुतकारते व्यवहार को

देखिए न, हम मंच पर बैठे थे न! हमें उसका द्वेष नहीं होता। लगभग तो ऐसे व्यवहार में हमें आना नहीं पड़ता, लेकिन आना पड़े तो हम दुतकारते नहीं। वहाँ पर भी ऐसा सब नाटक करते हैं। हमें ऐसा करना है और वैसा करना है, ऐसा नहीं होता। हमें व्यवहार को दुतकारना नहीं है। जो व्यवहार हो गया, उसमें 'अंबालाल मूलजीभाई' वह व्यवहार सत्ता के अधीन हैं। 'हम' निश्चय सत्ता के अधीन हैं। 'हम' तो निश्चय सत्ता में ही हैं, स्व-सत्ताधारी हैं। इसलिए व्यवहार को किंचित्मात्र दुतकार नहीं लगनी चाहिए। यानी व्यवहार उदयकर्म के अधीन है। लेकिन व्यवहार सत्ता हम कबूल कब करते हैं कि जब आदर्श हो तब, वर्ना नहीं करते। अर्थात् व्यवहार को किंचित्मात्र भी नहीं छेड़ना चाहिए।

## ज्ञानी के प्रतिक्रमण, बाड़ सहित

हम से भी किसी-किसी व्यक्ति को दुःख हो जाता है, हमारी इच्छा नहीं हो फिर भी। अब हम से सामान्य तौर पर ऐसा होता नहीं है लेकिन किसी व्यक्ति को हो जाता है। अभी तक पंद्रह-बीस सालों में दो-तीन लोगों को हुआ होगा। वे भी निमित्त होंगे तभी न? बाद में हम उसका प्रतिक्रमण करके उस पर फिर से बाड़ लगा देते हैं, ताकि वह गिर न जाए। जितना हमने ऊपर चढ़ाया है, वहाँ से गिर न जाए इसीलिए, उसकी रक्षा करके वापस बाड़ रख देते हैं। उसे गिरने तो देते ही नहीं। विरोध किया हो, गाली दे गया हो तब भी गिरने नहीं देते। उस बेचारे को पता ही नहीं है, अन्जाने में बोल गया है। उससे हमें परेशानी नहीं है अगर गिरने दें तो हमने गलत चढ़ाय था।

हम सैद्धांतिक होते हैं कि भाई, पेड़ को रोपने के बाद अगर वह रोड बनाते हुए में बीच में आ रहा हो तो रोड मोड़ देते हैं, लेकिन पेड़ को कुछ नहीं होने देते। हमारे ऐसे सिद्धांत हैं सारे। ऐसे किसी को गिरने नहीं देते। वह फिर उसी जगह पर रहता है। हम उसके विचार ही बदल देते हैं। हम यहाँ पर बैठे-बैठे उसके विचार ही बदल देते हैं। वहाँ हम ज़रा ज़्यादा मेहनत करते हैं। मेहनत ज़्यादा करनी पड़ती है। आपके लिए, सब के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती। उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। उसके सब विचार हमें पकड़ लेने पड़ते हैं। इससे आगे विचार न कर सके, ऐसा करना पड़ता है। कोई-कोई केस ही ऐसा होता है न! सारे केस ऐसे नहीं होते न!!

**प्रश्नकर्ता :** ये बाड़-वाड़ रखना, ये सब क्या है? उसमें उसे क्या करते हैं?

**दादाश्री :** उसका अंत:करण पकड़ लेते हैं, उसका व्यवस्थित हमारे हाथ में ले लेते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** वह कैसे?

**दादाश्री :** ऐसा सब हम ले लेते हैं, अगर नहीं लेंगे तो फिर गिर जाएगा न!

## ज्ञानी का *रसाल* व्यवहार

अक्रम विज्ञान क्या कहता है कि व्यवहार तो सभी रखते हैं, लेकिन व्यवहार *रसाल* (मधुर/हार्दिक/स्नेहमय) रखो, *रसाल*।

घर में कैसा व्यवहार होता है? *रसाल* व्यवहार! यानी मेरा स्वभाव तो ऐसा कि मैं निरंतर व्यवहार को *रसाल* ही रखता था, कोई साथ में बैठा हो उसके साथ भी *रसाल*। किसी को कोई घाटा नहीं हुआ है। *रसाल* व्यवहार से मुझे भी घाटा नहीं हुआ है। व्यापारी के पास जाऊँ तो व्यापारी के साथ भी *रसाल* व्यवहार।

**प्रश्नकर्ता :** *रसाल* व्यवहार मतलब कैसा होता है? ज़रा ज़्यादा विस्तार से समझाइए।

**दादाश्री :** वह मेरे साथ बातें करते वक्त आधी बातें निगल नहीं जाता। गपकना शब्द प्रयोग में लाते हैं या नहीं लाते? यह बहुत पुराने ज़माने का शब्द है। गपकना मतलब यदि दस लाइनें बोलनी हों न, तो उनमें से चार लाइनें भूलकर आगे की बोलता है तब दूसरे लड़के क्या कहते हैं, यह गपक गया चार लाइनें। मतलब इतना गपक गया। बोलने का हो न उसमें से इतना गपक लिया।

अत: अपना हमारा व्यवहार *रसाल* होना चाहिए मेरा यह कहना है कि सामनेवाला इंसान कैसा व्यवहार रखता है, उसे मैं समझ जाता हूँ कि उसने इतना गपक लिया। लेकिन हमें तो *रसाल* रखना है, वह मुख्य बात है। घर में व्यवहार *रसाल* ही होता है, नहीं होता? बहुत नियम नहीं चाहिए। *रसाल* मतलब क्या? अंदर कपट रहित, शुद्धतावाला। मतलब हमारा व्यवहार *रसाल* होना चाहिए। समभाव से *निकाल* करने से *रसाल* गुण उत्पन्न होता है। हमारे महात्माओं का *रसाल* है ही। किसी से पैर-वैर दब जाए न तो भी उसका उल्टा नहीं बोलते। समभाव से *निकाल* तो करते ही हैं रोज़ाना। इतने सारे लोग हैं लेकिन किसी का कोई टकराव नहीं हुआ है।

हमारा व्यवहार *रसाल* होता है। इससे आपको कैसा लगता कि ये कोई आप्तजन लगते हैं, दूसरे बात करें तो आप्तजन नहीं लगते। मैं इन्हें धमकाऊँ तो भी *रसाल* व्यवहार। यह *रसाल* शब्द यदि याद रहा तो काम निकाल देगा। *रसाल,* इतना अंदर याद रहेगा न तो भी बहुत हो गया!

## वीतराग की वाणी निमित्ताधीन

यदि आप मुझ से पूछें कि 'आप मुझे डाँटते क्यों नहीं,' तब मैं कहूँगा कि 'आप ऐसा व्यवहार नहीं लाएँ। आप जितना व्यवहार लाए थे, उतना आपको टोक दिया। इससे ज़्यादा व्यवहार आप नहीं लाए।' हमारी, ज्ञानीपुरुष की वाणी कठोर ही नहीं होती और सामनेवाले के लिए यदि कठोर वाणी निकल जाए तो वह हमें अच्छा नहीं लगता। इसके बावजूद भी निकल जाएँ तो हम तुरंत समझ जाते हैं कि इनके साथ हम ऐसा ही व्यवहार लेकर आए हैं। सामनेवाले के व्यवहार के अनुसार वाणी निकलती है। वीतराग पुरुषों की वाणी निमित्त के अधीन निकलती है। जिन्हें किसी भी प्रकार की कामना नहीं है, कोई इच्छा नहीं है, किसी भी तरह का राग-द्वेष नहीं है, ऐसे वीतराग पुरुषों की वाणी सामनेवाले के निमित्त से निकलती है। वह सामनेवाले को दु:खदाई नहीं होती। ज्ञानीपुरुष को तो गाली देने की फुरसत ही नहीं होती। फिर भी कोई महापुण्यशाली हो तो उसे गाली खानी पड़ती है। सामनेवाले का व्यवहार ऐसा हो तो रोग निकालने के लिए हमें ऐसी वाणी बोलनी पड़ती है, वर्ना हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? जो एक घंटे में मोक्ष देते हैं, वे गाली कहाँ से देंगे? लेकिन उसके रोग निकालने के लिए ऐसी कठोर वाणी निकल जाती है। कवि क्या कहते हैं कि

*'मूआ जेने कहे, ए तो अजर-अमर तपे,*
*गाळ्युं जेणे खाधी, एना पूरवना पापोने बाळे।'*

अगर कोई पूछे, 'दादा इन भाई से कठोर शब्द क्यों कह रहे हैं?' इसमें दादा क्या करें? वह व्यवहार ही ऐसा लाया है। कुछ लोग तो बिल्कुल नालायक होते हैं फिर भी दादा ऊँची आवाज़ में बात नहीं करते, इसी से समझ में नहीं आना चाहिए कि वह खुद का व्यवहार कितना सुंदर लाया है! जो सख्त व्यवहार लेकर आया होता है वही हम से कठोर वाणी सुनता है।

अब यदि हमारी वाणी उल्टी निकल जाए, तो वह सामनेवाले के व्यवहार के अधीन है लेकिन हमें तो मोक्ष में जाना है, इसलिए उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण करने के बाद हमारी वाणी बहुत ही सुंदर हो जाएगी, इसी जन्म में?

**दादाश्री :** उसके बाद तो और ही प्रकार की होगी! हमारी वाणी अंतिम प्रकार की है, इसका कारण प्रतिक्रमण ही है। व्यवहार शुद्धि के बगैर स्याद्वाद वाणी निकलेगी ही नहीं। पहले व्यवहार शुद्धि होनी चाहिए।

जो कुछ भी बोलता है, जितना-जितना बोलता है, वह सारा खुला अहंकार है। ज्ञानीपुरुष भी जब सिर्फ स्याद्वाद बात करते हैं उस समय उनका अहंकार नहीं होता, लेकिन अगर वे कुछ और बोलें न, तो उनका भी अहंकार ही निकलता है। उस निकलते हुए अहंकार को, डिस्चार्ज अहंकार कहा है। जितना भी बोलते हैं, सारा अहंकार ही है। बोलने की ज़रूरत नहीं हो फिर भी बोल पड़ते हैं, हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** इससे औरों का कल्याण हो जाता है।

**दादाश्री :** ठीक है। औरों का कल्याण हो उसमें कोई हर्ज नहीं है, लेकिन जहाँ कल्याण की ज़रूरत न हो और दूसरी बात हो न वहाँ भी बोल पड़ते हैं, 'नहीं, ऐसा ही करना है, आप समझते नहीं हो।' महावीर भगवान की वाणी स्याद्वाद थी और ज्ञानीपुरुष की भी वाणी स्याद्वाद होती है, स्याद्वाद यानी क्या कि सब सुनते हैं लेकिन किसी को ऐसा नहीं लगता कि हमारे विरुद्ध कुछ बोले हैं। चाहे मुस्लिम हो, कोई और हो, सभी को अच्छी लगे, उसे स्याद्वाद कहते हैं। निराग्रही और सभी व्यू पोइन्ट्स को स्वीकार करे, ऐसी होती है। भगवान की वाणी कितनी सुंदर!

## वीतराग के स्पर्श से सुख की अनुभूति

वीतराग पुरुष स्वामित्व के दस्तावेज फाड़ चुके होते हैं। 'यह मन मेरा है, बुद्धि मेरी है, वाणी मेरी है' ऐसा दस्तावेज फाड़ चुके होते हैं। वाणी को वे क्या कहते हैं, 'ओरिजिनल टेपरिकॉर्डर।'

'यह देह भी मेरी है,' ऐसा दस्तावेज फाड़ चुके होते हैं। इसलिए फिर क्या कहते हैं? यह 'पब्लिक ट्रस्ट है।' इसलिए हमें यदि अभी दाढ़ दुःखे तो असर होता है, लेकिन उसे 'हम' 'जानते' हैं, उसका वेदन नहीं करते। जब कोई हमें गालियाँ दे, अपमान करे, पैसे का नुकसान हो जाए, उसका हम पर ज़रा भी असर नहीं होता। हमें मानसिक असर बिल्कुल नहीं होता। शरीर से संबंधित हो, तो वह उसके धर्म के अनुसार असर दिखाएगा, लेकिन 'हम' खुद उसके 'ज्ञाता-दृष्टा' ही होते हैं। इसलिए हमें दुःख स्पर्श नहीं करता।

**प्रश्नकर्ता :** इसे वीतराग पुरुष की तादात्म्यपूर्वक की तटस्थता कही जाएगी, या सिर्फ तटस्थता कही जाएगी?

**दादाश्री :** हमें तादात्म्य बिल्कुल नहीं होता। हमारा इस देह के साथ भी पड़ौसी जैसा संबंध होता है, इसलिए देह को असर हो तो हमें कुछ भी स्पर्श नहीं करता। मन तो हमारा ऐसा होता ही नहीं। वह कैसा होता है? प्रति क्षण फिरता ही रहता है, एक जगह पर स्थिर नहीं रहता।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि 'पड़ौसी' के दुःख से 'खुद' दुःखी नहीं होते।

**दादाश्री :** किसी के भी दुःख से दुःखी नहीं होते। 'खुद का' स्वभाव दुःखवाला है ही नहीं, बल्कि 'इनके' (दादाश्री के) स्पर्श से सामनेवाले को सुख हो जाता है।

## ज्ञानी के हृदय के भाव की झलक

हमारे एक-एक शब्द में निरंतर हमें ऐसा भाव रहता है कि 'किसी जीवमात्र को दुःख नहीं हो।' जगत् के जीवमात्र को इस मन-वचन-काया से

किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं हो, इस भावना से ही 'हमारी' वाणी निकली हुई होती है। चीज़ काम नहीं करती, तीर काम नहीं करता, फूल काम नहीं करते, लेकिन भाव काम करते हैं। इसलिए हम सभी को भाव कैसे रखने चाहिए कि प्रात:काल निश्चित करना चाहिए कि 'जीवमात्र को इस मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं हो।' ऐसा पाँच बार बोलकर, यदि सच्चे भाव से बोलकर निकलें और बाद में यदि आपसे गुनाह हो गया तो यू आर नोट रिस्पोन्सिबल एट ऑल (आप तनिक भी ज़िम्मेदार नहीं हो), ऐसा भगवान ने कहा है। ऐसा क्यों कहा? तो कहते हैं, 'साहब, मेरी तो ऐसी भावना नहीं थी।' तो भगवान कहते हैं कि 'यस, यू आर राइट!' जगत् ऐसा है! यदि आपने किसी को भी, एक भी जीव को नहीं मारा हो और आप ऐसा कहो कि 'जितने भी जीव आएँ, उन्हें मारना ही चाहिए,' तो पूरे दिन की जीव हिंसा के आप हिस्सेदार बनते रहते हैं। यानी कि ऐसा है जगत्!

अहिंसक भाववाला तीर मारे तो ज़रा सा भी खून नहीं निकलता और हिंसक भाववाला फूल डाले, तब भी किसी को खून निकल जाता है। तीर और फूल इतने इफेक्टिव नहीं हैं, जितनी इफेक्टिव भावना है!

## ज्ञानी में नहीं होती स्थूल-सूक्ष्म भूलें

'ज्ञानीपुरुष' में देखी जा सकें वैसी स्थूल भूलें नहीं होतीं और सूक्ष्म भूलें भी नहीं होतीं। उनकी सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें होती हैं, लेकिन वे उनके 'हम' ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं। इन दोषों की आपको परिभाषा दूँ : स्थूल भूल यानी क्या? मुझ से कोई भूल हो जाए तो, यदि कोई जागृत व्यक्ति हो तो वह समझ जाएगा कि इन्होंने कोई भूल की है। सूक्ष्म भूल यानी कि मान लो यहाँ पच्चीस हज़ार लोग बैठे हों तो मैं समझ जाता हूँ कि दोष हुआ लेकिन उन पच्चीस हज़ार में से मुश्किल से पाँचेक लोग ही सूक्ष्म भूल को समझ सकेंगे। सूक्ष्म दोष तो बुद्धि से भी देखे जा सकते हैं, जबकि सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें, वे तो ज्ञान से ही दिखाई देती हैं। मनुष्यों को सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष नहीं दिखाई देते। देवी-देवता यदि अवधिज्ञान से देखें तभी उन्हें दिखाई देते हैं! फिर भी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते, वैसे सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष मुझ में रहे हुए हैं हममें सूक्ष्म से सूक्ष्म, अति सूक्ष्म, दोष भी हमारी दृष्टि से जा नहीं सकते, और किसी को पता नहीं चलता कि हमारा दोष हुआ है।

## एक सरीखा (अविरत) प्रेम रहता है सदा

आपके दोष भी हमें दिखाई देते हैं, लेकिन हमारी दृष्टि आपके शुद्धात्मा की तरफ होती है, उदयकर्म की तरफ दृष्टि नहीं होती। हमें सभी के दोषों का पता चल जाता है लेकिन उसका हम पर असर नहीं होता।

आपकी निर्बलता हम जानते हैं और निर्बलता होती ही है। इसलिए हमारी सहज क्षमा होती है। क्षमा देनी नहीं पड़ती, मिल जाती है, सहज रूप से। (हमें आपको) सहज क्षमा गुण तो अंतिम दशा का गुण कहलाता है। हमारी सहज क्षमा होती हैं। इतना ही नहीं, लेकिन आपके प्रति हमें एक सरीखा प्रेम रहता है। जो बढ़े-घटे, वह प्रेम नहीं होता, वह आसक्ति है। हमारा प्रेम बढ़ता नहीं और घटता भी नहीं। वही शुद्ध प्रेम, परमात्म प्रेम है!

## प्रेम से प्रेम जागृत होता है

अभी यदि मैं किसी बड़ी उम्रवाले को मारूँ, तो भी उसे गुस्सा नहीं आता, इसका क्या कारण है? प्रेम से मारता हूँ। आपके अंदर प्रेम नहीं होता। प्रेम लाएँगे ही कहाँ से? प्रेमवाला कोई व्यक्ति देखा है? कहाँ देखा है?

इस बच्चे को मैं मारता रहूँ न, फिर भी खुश होता है और तू मारकर देख? मेरे अंदर प्रेम है,

इसलिए उसके अंदर भी प्रेम जागृत होता है। मैं चाहे जितना मारूँ तो भी मेरे लिए कुछ नहीं होता। मुझ पर वह खुश हो जाता है, क्योंकि मैं प्रेम से देखता हूँ और तेरे अंदर तो अहंकार भरा पड़ा है, इसलिए फिर उस बच्चे के अंदर भी अहंकार जाग जाता है और फिर दोनों का अहंकार टकराता है, 'आ जा' कहेगा।

आप यदि उसे एक चपत लगाओ तो भी वह रोने लगेगा, इसका क्या कारण है? उसे चोट लगी इसलिए! नहीं, उसे चोट लगने का दु:ख नहीं है। उसका अपमान किया, उसका उसे दु:ख है। इस जगत् ने 'प्रेम' शब्द देखा ही नहीं है। अगर कहीं थोड़ा प्रेम देखा होगा, तो मदर (माँ) का देखा होगा। वह भी थोड़ा सा!

## दादा खोलते हैं सुख की दुकान

एक व्यक्ति मुझ से कहता है कि 'मुझे कुछ समझ नहीं पड़ती है। मुझे कुछ आशीर्वाद दीजिए।' उसके सिर पर हाथ रखकर मैंने कहा, 'जा, आज से सुख की दुकान खोल। अभी तेरे पास जो है वह दुकान खाली कर डाल।' सुख की दुकान मतलब क्या? सुबह से उठे तब से दूसरे को सुख देना, दूसरा व्यापार नहीं करना। अब उस इंसान को तो यह बहुत अच्छी तरह से समझ में आ गया। उसने तो बस यह शुरू कर दिया, इसलिए वह तो खूब आनंद में आ गया! सुख की दुकान खोलेगा न, तब फिर तेरे भाग में सुख ही रहेगा और लोगों के भाग में भी सुख ही जाएगा। यदि हमारी हलवाई की दुकान हो तो फिर किसी के वहाँ जलेबी मोल लेने जाना पड़ेगा? जब खानी हो तब खा सकते हैं। दुकान ही हलवाई की हो, वहाँ फिर क्या? इसलिए तू सुख की ही दुकान खोलना। फिर कोई परेशानी ही नहीं।

मेरा धंधा ही यह है कि सुख की दुकान खोलनी। हमें दु:ख की दुकान नहीं खोलनी है। सुख की दुकान, फिर जिसे चाहिए वह सुख ले जाए और कोई दु:ख देने आए तो हम कहें कि 'ओहोहो, अभी बाकी है मेरा। लाओ, लाओ।' उसे हमें एक तरफ रख देना है। अर्थात् दु:ख देने आएँ तो ले लेते हैं। हमारा हिसाब है, तो देने तो आएँगे न? नहीं तो मुझे तो कोई दु:ख देने आता नहीं है।

ये 'दादा' तो 'ज्ञानीपुरुष', उनकी दुकान कैसी चलती है? पूरे दिन! यह 'दादा' की सुख की दुकान, उसमें किसी ने पत्थर डाला हो, फिर भी उसे गुलाब जामुन खिलाते हैं। सामनेवाले को थोड़े ही पता है कि यह सुख की दुकान है, इसलिए यहाँ पत्थर नहीं मारना चाहिए? वह तो, निशाना लगाए बिना जहाँ मन में आया वहाँ मारता है।

हमें 'किसी को दु:ख नहीं देना है,' ऐसा निश्चित किया फिर भी देनेवाला तो दे ही जाएगा न? तब क्या करेगा तू? देख मैं तुझे एक रास्ता बताऊँ। तुझे सप्ताह में एक दिन 'पोस्ट ऑफिस' बंद रखना है। उस दिन किसी का मनीऑर्डर स्वीकारना नहीं है और किसी को मनीऑर्डर करना भी नहीं है। और यदि कोई भेजे तो उसे एक तरफ रख देना और कहना कि आज पोस्ट ऑफिस बंद है, कल बात करेंगे। हमारा तो पोस्ट ऑफिस हमेशा बंद ही होता है। 'व्यवस्थित' का नियम यह है कि तूने जो निश्चित किया हो, उस अनुसार तुझे ग्राहक भिजवा देता है।

## ऐसे हुई कारुणयता की शुरुआत

किसी को दु:ख न हो ऐसा देखना चाहिए, भले ही वह नुकसान कर गया हो, क्योंकि पूर्व का कुछ हिसाब होगा। लेकिन हमें उसे दु:ख नहीं हो ऐसा करना चाहिए।

मनुष्य ने जब से किसी को सुख पहुँचाना शुरू किया तब से धर्म की शुरुआत हुई। खुद का सुख नहीं लेकिन सामनेवाले की अड़चन कैसे दूर हो,

यही रहता हो, तो वहाँ से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामनेवाले की अड़चन दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार भी नहीं आए, वह कारुण्यता कहलाती है। उससे ही 'ज्ञान' प्रकट होता है।

## शुद्ध होने से शक्ति उत्पन्न होती है

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आप जिस प्रकार से दूसरों के सुख के लिए प्रयत्न करते हैं और कितनों को भयंकर दु:खों की यातना में से परम सुखी बना देते हैं, तो हमें यदि वैसा बनना हो तो बन सकते हैं या नहीं?

**दादाश्री :** हाँ, हो सकते हो, लेकिन आपकी उतनी सारी 'कपैसिटी' (क्षमता) हो जानी चाहिए। आप निमित्त रूप बन जाओ, उसके लिए मैं आपको तैयार कर रहा हूँ, वर्ना आप करने या बनने जाओगे, तो कुछ भी हो पाए ऐसा नहीं है!

**प्रश्नकर्ता :** तो निमित्त रूप बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** यही सब जो मैं बता रहा हूँ वह और निमित्त रूप बनने से पहले कुछ प्रकार का 'कचरा' निकल जाना चाहिए।

उसमें किसी पर गुस्से होने का, किसी पर चिढ़ जाना ऐसे सब हिंसक भाव नहीं होने चाहिए। हालांकि वास्तव में आपमें ये हिंसक भाव नहीं हैं, ये आपके 'डिस्चार्ज' हिंसक भाव हैं, लेकिन जो 'डिस्चार्ज' हिंसक भाव हैं, वे खत्म हो जाएँगे तब ये सब शक्तियाँ हैं, वे 'ओपन' होंगी। 'डिस्चार्ज चोरियाँ', 'डिस्चार्ज अब्रह्मचर्य', ये सभी 'डिस्चार्ज' खाली हो जाएँगे, उसके बाद औरों के लिए निमित्त बनने की शक्ति उत्पन्न होगी! यह सब खाली हो जाए, तो आप परमात्मा ही बन गए! हमारा यह सब खाली हो गया है, इसीलिए तो हम निमित्त बने हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यानी पहले हमें 'ज़ंग' खाली करने का काम करना है।

**दादाश्री :** पुरुषार्थ करने से सबकुछ होगा! पुरुष हुआ इसलिए पुरुषार्थ में आ सकता है, ऐसा सब हमने कर दिया है! अब आप अपनी तरह से जितना पुरुषार्थ करो, उतना आपका!

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर सामनेवाले के लिए हमें जो गलत भाव हैं, खराब भाव हैं, वे प्रतिक्रमण करने से कम हो जाएँगे क्या?

**दादाश्री :** अपने खराब भाव टूट जाते हैं। अपने खुद के लिए ही है, ये सब। सामनेवाले को अपने से साथ कोई लेना-देना नहीं है।

## प्रतिक्रमण करके, किया सब खत्म

उस समय अज्ञान-अवस्था में हमारा अहंकार भारी था! 'फलाँ ऐसे, फलाँ वैसे' निरा तिरस्कार, तिरस्कार, तिरस्कार, तिरस्कार.... और कभी-कभी किसी की सराहना भी करते थे। एक ओर इसकी सराहना करते और दूसरी ओर उसका तिरस्कार करते। जब १९५८ में ज्ञान प्रकट हुआ तब से 'ए. एम. पटेल' से कह दिया कि जितने तिरस्कार किए हैं, सभी को साबुन डालकर धो दीजिए। इसलिए एक-एक व्यक्ति को खोजकर सभी धोते रहे। इस ओर के पड़ौसी, उस ओर के पड़ौसी, सारे परिवारवाले, चाचा, मामा सब के साथ तिरस्कार हुआ होता है। उन सभी का धो डाला।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् मन से प्रतिक्रमण किया, रूबरू जाकर नहीं?

**दादाश्री :** मैंने ए.एम.पटेल से कहा कि 'आपके किए सारे उलटे काम मुझे नज़र आते हैं। अब तो इन सभी उलटे किए हुए को धो डालिए।' तब उन्होंने क्या करना शुरू किया? कैसे धोने हैं?

मैंने तब उन्हें समझाया कि 'उन्हें याद कीजिए। मगनभाई को गालियाँ सुनाई हैं, सारी ज़िंदगी भला-बुरा कहा है, तिरस्कार किया है। सब का वर्णन करके कहना, 'हे मगनभाई के मन-वचन-काया का योग, द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म से भिन्न, प्रकट शुद्धात्मा भगवान! मगनभाई में स्थित शुद्धात्मा भगवान! मैं बार-बार मगनभाई से माफी माँगता हूँ, दादा भगवान को साक्षी रखकर माफी माँगता हूँ। और फिर से ऐसे दोष नहीं करूँगा।' यदि आप ऐसा करेंगे तब आपको सामनेवाले के चेहरे में परिवर्तन दिखेगा। उसका चेहरा बदला हुआ नज़र आएगा। आप यहाँ प्रतिक्रमण करेंगे और वहाँ परिवर्तन होता रहेगा।

## बरती नौ कलमें ज़िंदगीभर पूर्ण पुरुष को

हमारी इन नौ कलमों हैं न, उसमें उच्चतम भावनाएँ हैं। सारा साराँश इनमें समाया हुआ है। ये नौ कलमों का हम आजीवन पालन करते आए हैं, यह पूँजी है। अर्थात् यह हमारा रोज़मर्रा का माल हमने ज़ाहिर किया (बताया गया) है, अंततः लोगों का कल्याण हो उसकी खातिर, चालीस-चालीस सालों से ये नौ कलमें प्रतिदिन हमारे भीतर चलती ही रही हैं। जो लोगों के लिए मैंने ज़ाहिर(बताई) की हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अब तो हम 'हे दादा भगवान! मुझे शक्ति दो' ऐसा बोलते हैं, तो ये नौ कलमें आप किसे संबोधित करते थे?

**दादाश्री :** वह 'दादा भगवान' नहीं होंगे, तो कोई और नाम होगा। लेकिन नाम होगा ही। उन्हें संबोधित करके कहते थे। उसे 'शुद्धात्मा' कहो या चाहे जो कहो, वह उन्हें संबोधित करके कहते थे।

ये नौ कलमें किसी शास्त्र में नहीं हैं। हम जिसका पालन करते हैं और जो हमेशा हमारे अमल में ही हैं, वही आपको करने के लिए देते हैं। हमारी जो वर्तना है उसी प्रकार ये कलमें लिखी गई हैं। इन नौ कलमों के अनुसार हमारा वर्तन होता है, फिर भी हम भगवान नहीं कहलाते। भगवान तो, जो भीतर हैं वही भगवान! बाकी, किसी मनुष्य से ऐसा वर्तन नहीं हो सकता।

इसमें चौदह लोक का सार है। ये नौ कलमें जो लिखी हैं, उसमें चौदह लोक का सार है। पूरे चौदह लोक का जो दही हो, उसे मथकर यह मक्खन निकालकर रखा है। इसलिए ये सभी कितने पुण्यवान हैं कि (अक्रम मार्ग की) लिफ्ट में बैठे-बैठे मोक्ष में जा रहे हैं! हाँ, बस इतनी शर्त है कि हाथ बाहर मत निकालना!

ये नौ कलमें तो किसी जगह होती ही नहीं। नौ कलमें तो पूर्ण पुरुष ही लिख पाएँ। वे (आम तौर पर) होते ही नहीं न! वे हों तो लोगों का कल्याण हो जाए!

## दादाः कल्याणकारी, श्रद्धा की मूर्ति

आप जिससे पूछ रहे हैं वे इस समय वीतराग नहीं हैं! इस समय तो हम खटपटिया वीतराग हैं। खटपटिया का मतलब क्या कि जगत् का कल्याण हो और कल्याण हेतु यह खटपट करते रहें। बाकी वीतरागी और जन संपर्क को कोई लेना-देना ही नहीं है! पूर्ण वीतराग तो केवल दर्शन देते रहते हैं, और कोई खटपट या कुछ नहीं करते।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वीतरागी जो जन संपर्क करते हैं वह अपने कर्म खपाने के लिए हैं?

**दादाश्री :** अपना हिसाब पूरा करने के लिए, दूसरों के लिए नहीं। उन्हें और कोई भावना नहीं होती। 'जैसा हमारा कल्याण हुआ, वैसा ही इन सभी लोगों का कल्याण हो,' ऐसी हमारी भावना रहती है। वीतरागों को ऐसा नहीं होता। कोई भावना ही नहीं, पूर्णःतया वीतराग! और हमारी तो यह एक तरह की

भावना है। इसीलिए सबेरे जल्दी उठकर आराम से बैठ जाते हैं। और सत्संग शुरू कर देते हैं! जो रात के साढ़े ग्यारह बजे तक चलता रहता है! अर्थात् यह हमारी भावना है। क्योंकि हमारे जैसा सुख प्रत्येक को प्राप्त हो! इतने सारे दु:ख किसलिए? दु:ख हैं ही नहीं और बिना वजह दु:ख भुगत रहे हैं। यह नासमझी निकल जाएँ तो दु:ख चले जाएँगे। अब नासमझी कैसे निकले? कहने से नहीं निकलती, दिखाने से निकलेगी। इसलिए हम तो करके दिखलाते हैं। इसे मूर्त स्वरूप कहते हैं। वे श्रद्धा की मूर्ति कहते हैं।

## आप्तपुरुष के लक्षण

**प्रश्नकर्ता :** आप्तपुरुष की वाणी, वर्तन और विचार कैसे होते हैं?

**दादाश्री :** वे सब मनोहारी होते हैं, मन को हरनेवाले होते हैं, मन प्रसन्न हो जाए। उनका विनय अलग तरह का होता है, वह वाणी अलग तरह की होती है! विदाउट इगोइज़म (निर्‌हंकारी) वर्तन होता है। बिना इगोइज़म का वर्तन संसार में शायद ही कहीं देखने मिलता है वर्ना मिलता नहीं है न!

किसी भी जीव को मन से, वाणी से, काया से, कषाय से, अंत:करण से कभी भी दु:ख नहीं देने का जिसे भाव है वह शीलवान है! उसे जगत् में कोई दु:ख कैसे दे सकता है? किंचित्मात्र दु:ख देने के भाव नहीं हों, अपने दुश्मन को भी किंचित् दु:ख देने के भाव नहीं हों, उनके अंदर सिन्सियारिटी हो, मोरालिटी हो, सारे गुण (एक साथ) हों, किंचित्मात्र भी हिंसक भाव नहीं हों, तब 'शील' कहलाता है। तब वहाँ पर शेर भी शांत हो जाता है।

शील कब होता है कि जब ऐसा भाव रहे कि किसी भी जीवमात्र को मन से, अहंकार से, अंत:करण से कभी भी, ज़रा-सा भी दु:ख नहीं हो, तब शील उत्पन्न होता है। जिनकी वाणी से किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं होता, जिनके वर्तन से किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं होता, जिनके मन में खराब भाव नहीं आते, वे होते हैं शीलवान!

## ज्ञानी हृदय में निरंतर कल्याण की भावना

निरंतर जगत् कल्याण की भावना, दूसरी कोई भी भावना नहीं होती। खाने के लिए जो मिले, सोने के लिए जो मिले, ज़मीन पर सोने को मिले फिर भी निरंतर भावना क्या होती है? जगत् का किस तरह कल्याण हो! अब वह भावना उत्पन्न किसे होती है? खुद का कल्याण हो चुका हो, उसे यह भावना उत्पन्न होती है। जिसका खुद का कल्याण नहीं हुआ हो, वह जगत् का कल्याण किस तरह करेगा? भावना करे तो होगा। 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तो उसे उस 'स्टेज' में ला देते हैं, और उस स्टेज में आने के बाद उनकी आज्ञा में रहे तो भावना करना सीख जाता है।

## मुझे जो सुख हुआ, वह सभी को हो..

लोग मुझ से पूछते हैं कि 'आप जगत् कल्याण का *नियाणा* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) कैसे पूर्ण करेंगे,' अब उम्र हो गई! सुबह उठने के बाद, चाय पीते-पीते दस तो बज ही जाते हैं। 'अरे भाई! हमें इस स्थूल देह से कुछ नहीं करना है, सूक्ष्म में हो रहा है सब।' यह स्थूल तो मात्र दिखावा करना है। इनको स्थूल का आधार तो देना ही होगा न? हमें इन दु:खों में से किस चीज़ की खोज करनी है? सनातन सुख की। यह (संसारी) सुख तो बहुत भोग लिया, उससे संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती।

## पूर्णता की प्राप्ति के लक्षण क्या हैं?

**प्रश्नकर्ता :** आध्यात्मिक स्टडि करनेवाला पूर्णता तक पहुँच गया, इसका पता कैसे चलेगा?

**दादाश्री :** उनकी वाणी वीतराग होती है, बात वीतराग होती है, वर्तन वीतराग होता है। उनकी हर

एक बात में वीतरागता होती है। गालियाँ दें तो भी वीतरागता और फूल चढ़ाएँ तो भी वीतरागता होती है, उनकी वाणी स्याद्वाद होती है, यानी किसी धर्म का, किसी भी जीव का प्रमाण आहत नहीं होता।

## यह तीर्थंकरों का माल है

किसी का प्रमाण आहत न हो, ऐसी हमारी वाणी होती है। इन ३६० डीग्री में इस वर्ल्ड का कोई ऐसा प्रमाण नहीं है, जो आहत हो। किसी भी धर्म का, किसी भी व्यक्ति के अभिप्राय, प्रमाण आहत न हो ऐसी हमारी विचारणा होती है। उसे स्याद्वाद कहते हैं और यह वीतरागों की चीज़ है। मेरे पास यह तीर्थंकरों का माल है, मेरा खुद का माल नहीं है। लोग कहते हैं कि 'अब तो आपका, दादा भगवान का चलेगा न?' मैंने कहा, 'नहीं भाई, यह शासन तो भगवान महावीर का ही चलता रहेगा।' हम तो इसमें, इस काल में सोने के कलश के रूप में काम कर रहे हैं। लोगों को शांति बहुत हो जाती है न!

## किसी को थोड़ा भी दुःख न हो, वह अंतिम लाइट

किसी को थोड़ा सा भी दुःख न हो, उसे अंतिम 'लाइट' कहते हैं। विरोधी को भी शांति रहती है। हमारे जो विरोधी होंगे न, वे ऐसा तो -कहेंगे कि 'भाई, इनके और हमारे बीच मतभेद है, लेकिन उनके लिए मुझे भाव है, मान है।' अंत में ऐसा कहेंगे! विरोध रहेगा ही। विरोध हमेशा रहेगा ही। ३६० डिग्री का और ३५६ डिग्री में भी विरोध तो रहता ही है। इसी तरह हर जगह विरोध रहता है। सभी मनुष्य एक ही डिग्री पर नहीं आ सकते। सभी मनुष्य एक ही तरह की विचार श्रेणी में नहीं आ सकता। क्योंकि मनुष्यों की विचार श्रेणी की चौदह लाख योनियाँ हैं। बोलो, आपके साथ कितने 'एडजस्ट' हो सकेंगे? कुछ योनी ही 'एडजस्ट' हो सकती हैं, सभी नहीं हो सकतीं।

## आदर्श व्यवहार करके, पार उतर जाओ

पहले व्यवहार सीखना है। व्यवहार की समझ के बगैर तो लोग तरह-तरह से मार खाते हैं। व्यवहार आदर्श होना चाहिए। यदि व्यवहार में पक्के, सतर्क रहोगे तो कषाई हो जाओगे। यह संसार तो नाव है, नाव में चाय-नाश्ता सब कुछ करना है लेकिन समझ जाना है कि इसके द्वारा किनारे पर पहुँचना है। यदि आपको ठीक लगे तो इस तरह से करना, वर्ना आपको जो पसंद हो वह करना। मैं आप पर कोई दबाव नहीं डाल रहा हूँ, मैं तो आपको समझा रहा हूँ कि यदि इस तरह से करोगे तो लाइफ बहुत अच्छी व्यतीत होगी। भगवान आपके घर रहेंगे और बरकत आएगी। यानी व्यवहार को किंचित्मात्र भी *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुतकारना) नहीं लगनी चाहिए।

अब हम शुद्धात्मा हुए हैं तो फिर शुद्धात्मा तो निरंतर शुद्ध ही रहता है, हमेशा के लिऐ। यह हम हमारे आसपासवाले के आधार पर देख सकते हैं कि ओहोहो, किसी को दुःख नहीं हो रहा, किसी को परेशानी नहीं हो रही इसिलए हम शुद्ध हो गए। जितनी अशुद्धि उतनी सामनेवाले को परेशानी और खुद को परेशानी। खुद की परेशानी कब मिट जाती है? जब 'यह' ज्ञान मिलें तब। और खुद से सामनेवाले की परेशानी मिट जाएँ तब हम पूर्ण हुए।

**- जय सच्चिदानंद**

**मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर:** (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **अमरेली त्रिमंदिर:** 9924344460, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

## दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**१५-१७ मई :** अहमदाबाद के सुविख्यात सरदार पटेल स्टेडियम में सत्संग–ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पहली बार इतने बड़े विशाल स्टेडियम में सत्संग कार्यक्रम आयोजित हुआ। ४६ डीग्री तक की असह्य गरमी में भी मुमुक्षु खुद के प्रश्नों के समाधान और आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आए। अहमदाबाद सेन्टर के जीएनसी के १२५ बच्चों ने पूज्य श्री का हार्दिक स्वागत किया। १३२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। लगभग ६५० सेवार्थीयों के लिए आप्तपुत्र द्वारा 'सेवा के महत्व' पर सत्संग हुआ और उसके बाद पूज्यश्री के दर्शन का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। WMHT ग्रुप के लिए आप्तपुत्री और MMHT के लिए आप्तपुत्र द्वारा विशेष सत्संग हुआ। पाँच आज्ञा और प्रतिक्रमण करने की और ज़्यादा समझ मिले, इसलिए ज्ञानविधि के दूसरे दिन भी ज्ञान प्राप्ति किए हुए नए महात्मा आप्तपुत्र सत्संग में आए थें।

**२०-२२ मई :** पूज्य श्री की निश्रा में भादरण में आप्तसिंचन के साधकों के लिए तीन दिन की वार्षिक शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर का मुख्य हेतु यह होता है कि साधकों को पूज्य श्री का नज़दीकी सांनिध्य प्राप्त हो सके। इन्फोर्मल सत्संग, दर्शन, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नाटक, भक्ति–गरबा, मोर्निंग वॉक जैसे विविधता से भरे कार्यक्रम से सभी साधक आनंदित हो उठे थें। पूज्य श्री के दर्शन का कार्यक्रम भादरण के महात्माओं के लिए आयोजित हुआ। पूज्य श्री भादरण गाँव के सुप्रसिद्ध भद्रकाली माँ के मंदिर में माँ के आशीर्वाद प्राप्त करने गए थे।

**१-३ जून :** गोधरा त्रिमंदिर में ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ। २ तारीख को पूज्य श्री की निश्रा में आयोजित ज्ञानविधि में लगभग ८५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग दौरान लगभग ३०० सेवार्थीयों ने पूज्य श्री के दर्शन किए। फोलोअप सत्संग में भी ज्ञान प्राप्त किए हुए महात्माओं ने ज्ञान, पाँच आज्ञा और आत्मा संबंधित और ज़्यादा समझ प्राप्त की।

**६-७ जून :** पालनपूर में ७ साल बाद पुनः सत्संग ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस बार प्रचार के लिए स्थानिक महात्माओं में बहुत उत्साह देखा गया इसलिए बड़ी संख्या में नए मुमुक्षु आए थे। २१०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में १५० सेवार्थियों को पूज्य श्री के सत्संग–दर्शन का अपूर्व लाभ मिला। फोलोअप सत्संग में भी ज्ञान लिए हुए ज़्यादात्तर महात्मा वापस आए थे।

**८ जून :** एक दिन की अंबाजी यात्रा में विविध सेन्टर से ४५०० से भी ज़्यादा महात्मा आए थे। पूज्य श्री ने अंबाजी मंदिर के प्रसिद्ध चाचर चौक में १ घंटे के लिए सत्संग किया और अंत में प्रार्थना करवाई। दोपहर के महाप्रसाद के बाद शाम को महात्मा सेफ्रोनी–मेहसाना गए और वहाँ गरबा का आनंद उठाया। अंत में पूज्य श्री ने विधि करवाई, उसके बाद महात्मा अपने–अपने गाँव जाने के लिए रवाना हुए। सभी महात्माओं ने यात्रा के दौरान अति आनंद की अनुभूति महसूस की।

---

## पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**

- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० तथा रात १०-३० से ११(हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

**USA**

- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**अमरावती** **दि** : 2 अगस्त **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9403411471
**स्थल :** टाउन होल, पटवीपुरा.

**वैशाली** **दि** : 4 अगस्त **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 9708234981
**स्थल :** म. विद्यालय जतकौली के पास, लालगंज जतकौली रोड, जि. वैशाली.

**बख्तियारपुर** **दि** : 5 अगस्त **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9470083078
**स्थल :** देवकीनारायण कुंज, सीडी घाट गली.

**नवादा** **दि** : 6 अगस्त **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 7654057901
**स्थल :** केवत कुटिर, विद्युत कार्यालय के सामने, गया रोड, नवादा.

**गया** **दि** : 7 अगस्त **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9835623307
**स्थल :** होटेल उत्सव एन्ड मेरेज होल, आनंदी मा मंदिर के पास, न्यू गोदाम, जी.बी. रोड, गया.

**पटना** **दि** : 8 अगस्त **समय :** शाम 5 से 7, तथा 9 अगस्त **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 7352723132
**स्थल :** जैन भवन, गोबिंद मित्रा रोड, पटना.

**आरा** **दि** : 10 अगस्त **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9934620084
**स्थल :** मिशन रोड, पकरी, आरा.

**दिल्ली** **दि** : 11 अगस्त **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9810098564
**स्थल :** लौरेल होई स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला, पीतमपुरा, दिल्ली.

**भंडारा** **दि** : 15 अगस्त **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9403411471
**स्थल :** श्री गुजराती समाज वाडी, जलाराम चौक, स्टेशन रोड, भंडारा.

**चंदरपुर** **दि** : 16 अगस्त **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9403411471
**स्थल :** IMA होल, SP कोलेज के पास, चंदरपुर.

**अकोला** **दि** : 5 अगस्त **संपर्क :** 9422403003 **राजस्थान** **दि** : 10-16 अगस्त **संपर्क :** 8290333699
**मुर्तीजापुर** **दि** : 5 अगस्त **संपर्क :** 8975967656 **उत्तर भारत** **दि** : 29 अग. से 6 सित. **संपर्क :** 09327010101

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० ( हिन्दी में )**
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में) **( नया कार्यक्रम )**
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)

**USA** - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

**UK** - **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)

**Singapore** - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

**Australia** - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

**New Zealand** - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)

**USA-UK-Africa-Aus.** - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

## गुजरात के अलावा विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

| सेन्टर | | समय | कार्यक्रम का पता | |
|---|---|---|---|---|
| दिल्ली | ( २६ जुलाई ) | सुबह 10 बजे से 4 | लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने. | 9810098564 |
| गुड़गाँव | ( २ अगस्त ) | सुबह 10 से 12 | Q-349A, साउथ सिटी-1, गुड़गाँव. | 9810307602 |
| जालंधर | ( 2 अगस्त ) | सुबह 10 से 1 | अर्जुन होल, श्री देवी तलाव मंदिर. | 9814063043 |
| गाज़ियाबाद | ( ३१ जुलाई ) | सुबह 10 से 2 | हाउस नं. 227, सेक्टर-17, ब्लोक-'ई', कोनार्क एवन्यु, वसुंधरा. | 9968738972 |
| चंडीगढ़ | ( ३१ जुलाई ) | | समय और स्थल की जानकारी के लिए संपर्क. | 9872188973 |
| जयपुर | ( ३१ जुलाई ) | दोपहर 3 से 6 | विनोबा ज्ञान मंदिर, युनीर्वसिटी मार्ग, बापुनगर | 8290333699 |
| पाली | ( 31 जुलाई ) | शाम 4-30 से 7 | मेवाडा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी, कोलेज रोड. | 9461251542 |
| कोलकाता | ( २ अगस्त ) | सुबह 10 से शाम 6-30 | लक्ष्मीनारायण मंदिर, शरत बोस रोड. | 9830093230 |
| मुझफ्फरपुर | ( २ अगस्त ) | सुबह 10 से शाम 5 | आमंत्रण रेस्टोरंट & होल, EV स्टार मार्केट, मिठनपुरा. | 9608030142 |
| धनबाद | ( ३१ जुलाई ) | शाम 5-30 से 8-30 | UG A आर.के. एपार्टमेन्ट, रिलायन्स स्टोर के पीछे, कटरास रोड, बेंक मोड. | 9431191375 |
| पटना | ( ३१ जुलाई ) | सुबह 10 से शाम 5 | जैन भवन, गोबिंद मित्रा रोड, पटना. | 7352723132 |
| इन्दौर | ( ३१ जुलाई ) | शाम 4 से 8 | कच्छी जैन भुवन, 17/3, स्नेहलता गंज, गली नं-3 अग्नी बान प्रेस के पीछे, भंडारी ब्रीज. | 9039936173 |
| अंजड़ | ( ३० जुलाई ) | दोपहर 3 से 8 | अन्नपूर्णा नगर, अंजाड. | 9617153253 |
| भोपाल | ( २ अगस्त ) | सुबह 11 से शाम 6 | जनकविहार कोम्प्लेक्ष, मालवियानगर. | 9425024405 |
| जबलपुर | ( ३१ जुलाई ) | दोपहर 2-30 से 7 | कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज भवन, मदन महल चौक के पास | 9425160428 |
| रायपुर | ( ३१ जुलाई ) | शाम 5 से 8 | दादा भगवान सत्संग सेन्टर, तेली भवन के पास, अगासे IT। के सामने, अश्वनी नगर. | 9329644433 |
| भिलाई | ( ३१ जुलाई ) | शाम 5 से 7-30 | दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास. | 9827481336 |
| पूणे | ( २ अगस्त ) | सुबह 11 से शाम 4 | स्वंयवर मंगल कार्यालय, पंचमी होटेल के पास. | 7218473468 |
| अमरावती | ( १ अगस्त ) | शाम 5 से 8 | दोशी वाडी, गुलशन पावर पास, जय स्तंभ चौक. | 9403411471 |
| औरंगाबाद | ( ३१ जुलाई ) | दोपहर 3 से 8 | "निमिषा बंगलो', पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, पुलीस कमिश्नर रोड. | 8308008897 |
| नागपुर | ( ३१ जुलाई ) | | कच्छी विशा भवन, छापरु नगर, अनाथ विद्यालय पास | 9970059233 |
| जलगाँव | ( २ अगस्त ) | शाम 4 से 7 | लाज भुवन, प्लोट नं-51, विवेकानंद नगर, जिलापेठ, केमीस्ट भुवन रोड, श्री फोटो के पास. | 9420942944 |
| बेंगलोर | ( ३१ जुलाई ) | दोपहर 3 से 6 | महाराष्ट्र मंडल, नं -28, दुसरा क्रोस, गांधीनगर. | 9590979099 |
| हैदराबाद | ( ३१ जुलाई ) | शाम 5 से 9 | कच्छी भवन, राम कोट, ईडन गार्डन | 9989877786 |
| हुबली | ( २ अगस्त ) | शाम 4 से 7 | श्री लक्ष्मी नारायण सनातन पाटीदार समाज, प्लोट नं-32, न्यू टीम्बर यार्ड, उंकल | 9739688818 |
| चेन्नई | ( ३१ जुलाई ) | दोपहर 3 से 6 | बी-7, केन्ट एपार्ट. 26 रीथर्डन रोड. | 9380159957 |

अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान की कृपा और आत्मज्ञानी पूज्य नीरु माँ के आशीर्वाद से साल 2015 का गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाने के लिए वेस्ट कोस्ट के सभी महात्माओं को मेजबान होने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह अनुपम अवसर हम सभी महात्माओं के लिए अलौकिक आनंद और परम सुख का अनुभव करानेवाला है। हर साल की तरह इस साल भी आप सभी वो ही दिव्य अनुभव करने के लिए फिनिक्स शहर में पधारे ऐसी हमारी सभी की हृदय से भावना है। इस शुभ अवसर पर अक्रम विज्ञान की प्रत्यक्ष लिंक रूप आत्मज्ञानी पू. दीपकभाई देसाई के सांनिध्य में परम पूज्य दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा महोत्सव को शानदार रूप से मनाने के लिए आप सभी को तथा आपके परिवारजनों, मित्रों, सभी को भावपूर्ण निमंत्रण दे रहे है।

वेस्ट कोस्ट के सभी महात्माओं के जय सच्चिदानंद

| Date | Spiritual Discourses | Morning Session | Evening Session |
|---|---|---|---|
| Mon. July 27 | GP Shibir | 9:30 to 12.00 pm | 4:30 to 7:00 pm |
| Tue. July 28 | GP Shibir | 9:30 to 12.30 pm | |
| | General Satsang | | 4:30 to 7:00 pm |
| Wed. July 29 | Aptaputra Satsang | 9:30 to 12.30 pm | |
| | GNANVIDHI | | 4:00 to 7:00 pm |
| Thu. July 30 | Swami Pratishtha | 9:30 to 12.30 pm | |
| | GP Shibir | | 4:30 to 7:00 pm |
| Fri. July 31 | GURUPURNIMA | 8:00 to 1.00 pm | 4:30 to 7.00 pm |

**Satsang Venue**

**Arizona Biltmore, A Waldorf Astoria Resort 2400 East Missouri Ave.,Phoenix, AZ**

**Tel.: 1-877-505-DADA(3232) Ext. 10, Email: gp@dadabhagwan.org, Visit: www.dadabhagwan.org**

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### अडालज त्रिमंदिर

दि. **२२ अगस्त** (शनि), शाम ४ से ७ - **सत्संग** तथा **२३ अगस्त** (रवि), शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**

दि. **२४ अगस्त** (सोम), शाम ४ से ७ - **आप्तपुत्र सत्संग**

दि. **५ सितम्बर** (शनि), रात १० से १२ - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति**

### जयपुर

दि. **२५ अगस्त** (मंगल), शाम ५-३० से ८-३० - **सत्संग** तथा **२६ अगस्त** (बुध), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

दि. **२७ अगस्त** (गुरु), शाम ५-३० से ८-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** उत्सव होल, पी-10, सेक्टर - 2, विद्याधरनगर, जयपुर (राजस्थान). **संपर्क :** 8233363902

### नागपुर

दि. **२८-२९ अगस्त** (शुक्र-शनि), शाम ५ से ८ - **सत्संग** तथा **३० अगस्त** (रवि), शाम ४-३० से ८ - **ज्ञानविधि**

दि. **३१ अगस्त** (सोम), शाम ५ से ८ - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** वसंतराव देशपांडे होल, आमदर निवास के सामने, सिविल लाइन्स, नागपुर, (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 8421680086

### अमरावती

दि. **१ सितम्बर** (मंगल), शाम ६ से ९ - **सत्संग** तथा **२ सितम्बर** (बुध), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

दि. **३ सितम्बर** (गुरु), शाम ६ से ९ - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन, ITI कोलेज के सामने, मोरशी रोड (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 9422335982

### दिल्ली

दि. **२५-२६ सितम्बर** (शुक्र-शनि), शाम ५-३० से ८-३० - **सत्संग** तथा **२७ सितम्बर** (रवि) शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

दि. **२८ सितम्बर** (सोम), शाम ५-३० से ८-३० - **आप्तपुत्र सत्संग,**

**स्थल :** दी मैडनस क्राउन बेन्क्वाइट्स, B-1, पीरागढ़ी चौक, पीरागढ़ी मेट्रो स्टेशन के सामने, नई दिल्ली. **संपर्क :** 9811332206

### जालंधर

दि. **२९ सितम्बर** (मंगल), शाम ४-३० से ७-३० - **सत्संग** तथा **३० सितम्बर** (बुध) शाम ४ से ७-३०- **ज्ञानविधि**

दि. **१ अक्तूबर** (गुरु), शाम ४-३० से ७-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** देश भगत यादगार होल, जी.टी. रोड, जालंधर. **संपर्क :** 9814063043

### अडालज त्रिमंदिर में पर्युषण पारायण

**१० से १७ सितम्बर** (गुरु से गुरु) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३** तथा **१३ ( पू. )** पर **वांचन-सत्संग प्रश्नोत्तरी**

**१८ सितम्बर** (शुक्र) सुबह ९ बजे से - **दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-३ और १३ (पू.) (गुजराती) किताबों का वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समज सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।)

### परम पूज्य दादा भगवान का 108वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

**उद्घाटन समारोह :** २४ नवम्बर, **जन्मजयंती :** दि. २५ नवम्बर,

**सत्संग शिविर :** दि. २४ से २९ नवम्बर, **ज्ञानविधि** : दि. २८ नवम्बर

**स्थल :** मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणी नगर, द बीशोप स्कूल के सामने, पूणे. **संपर्क :** 7218473468

इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम विशेषत: हिन्दी में होंगे।

जुलाई 2015
वर्ष - 10 अंक - 9
अखंड क्रमांक - 117

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

# ज्ञानी की महात्माओं के प्रति कारुण्यमय दृष्टि

हमें आपके सभी दोष दिखाई देते हैं लेकिन हमारी दृष्टि दोष की ओर नहीं होती। हमें तुरंत ही उसका पता लग जाता है, लेकिन हमारी दृष्टि तो आपके शुद्धात्मा की ओर ही होती है, आपके उदयकर्म की ओर दृष्टि नहीं होती। आपका दोष दिखाई देने के बावजूद भी हमें भीतर उसकी असर नहीं होती। हमें पता होता है कि ( आप में ) ऐसी निर्बलता होती ही है। इसलिए हमें सहज क्षमा होती है। इसलिए हमें किसी को डाँटना नहीं पड़ता। बहुत बड़े दोष हो जाएँगे ऐसा लगे तो हम उसे बुलाकर दो शब्द कहते हैं। यहाँ से वह स्लीप हो जाएगा ऐसा लगे तभी कहते हैं। हम जानते हैं कि आज नहीं तो कल जगेगा। क्योंकि जागृति का मार्ग है यह! निरंतर 'एलर्टनेस' ( जागृति ) का मार्ग है यह।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner, Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.